गरवी गुजरात

PRGI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 16
अंक : 078
दि. 17.07.2026,
शुक्रवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

मानसून सत्र से पहले कांग्रेस का शक्ति प्रदर्शन, सोनिया गांधी के आवास पर रणनीतिक बैठक; सरकार को घेरने के लिए तैयार होगा विपक्ष का रोडमैप

नई दिल्ली। संसद के आगामी मानसून सत्र से पहले कांग्रेस ने अपनी राजनीतिक और संसदीय तैयारियां तेज कर दी हैं। केंद्र सरकार को विभिन्न राष्ट्रीय, आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों पर घेरने की रणनीति तय करने के उद्देश्य से शुक्रवार को कांग्रेस संसदीय दल (सीपीपी) की अध्यक्ष सोनिया गांधी के आवास पर पार्टी के शीर्ष नेतृत्व की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित होगी। इस बैठक में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी, संगठन महासचिव के.सी. वेणुगोपाल, कांग्रेस के वरिष्ठ सांसदों, संसदीय रणनीतिकारों और विभिन्न संसदीय समितियों से जुड़े नेताओं की मौजूदगी रहेगी। माना जा रहा है कि मानसून सत्र से पहले होने वाली यह बैठक कांग्रेस की संसदीय रणनीति को अंतिम रूप देने के साथ-साथ विपक्षी दलों के साथ समन्वय की दिशा भी तय करेगी।

संसद का मानसून सत्र इस बार राजनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। एक ओर केंद्र सरकार कई अहम विधेयकों और नीतिगत प्रस्तावों को संसद के समक्ष रखने की तैयारी कर रही है, वहीं दूसरी ओर विपक्ष भी महंगाई, बेरोजगारी, कृषि, संघीय ढांचे, सामाजिक न्याय, चुनावी सुधार, परिसीमन और अन्य जनहित के मुद्दों पर सरकार को घेरने की रणनीति बना रहा है। कांग्रेस चाहती है कि संसद के भीतर और बाहर विपक्ष की आवाज संगठित और प्रभावी तरीके से सामने आए। इसी उद्देश्य से यह उच्चस्तरीय बैठक बुलाई गई है।

पार्टी सूत्रों के अनुसार बैठक का सबसे महत्वपूर्ण एजेंडा आगामी मानसून सत्र के दौरान उठाए जाने वाले मुद्दों को अंतिम रूप देना होगा। कांग्रेस नेतृत्व विभिन्न राष्ट्रीय घटनाक्रमों, आर्थिक चुनौतियों, राज्यों से जुड़े विषयों और केंद्र सरकार की नीतियों पर विस्तृत चर्चा करेगा। इसके साथ ही संसद में सरकार को किन विषयों पर घेरा जाए, किन मुद्दों पर स्थगन प्रस्ताव या विशेष चर्चा की मांग की जाए और किन विधेयकों पर पार्टी का आधिकारिक रुख क्या होगा, इस पर भी विस्तार से विचार-विमर्श किया जाएगा।

बैठक में विपक्षी दलों के साथ बेहतर समन्वय स्थापित करने पर भी विशेष जोर रहने की संभावना है। कांग्रेस चाहती है कि संसद के भीतर प्रमुख विपक्षी दल साझा रणनीति के साथ आगे बढ़ें, ताकि राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर सरकार को प्रभावी ढंग से जवाबदेह बनाया जा सके। सूत्रों का कहना है कि बैठक में इस बात पर भी चर्चा होगी कि किन मुद्दों पर विपक्ष संयुक्त रूप से आवाज उठाए और किन विषयों पर अलग-अलग दल अपनी स्वतंत्र राजनीतिक स्थिति बनाए रखें।

संसद का मानसून सत्र 20 जुलाई से 13 अगस्त तक चलेगा। इस अवधि में कुल 19 बैठकें (सिटिंग्स) प्रस्तावित हैं। संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू पहले ही संकेत दे चुके हैं कि सत्र के दौरान कई महत्वपूर्ण विधायी कार्यों के साथ-साथ राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर चर्चा कराई जाएगी। ऐसे में सत्ता पक्ष और विपक्ष, दोनों ही अपनी-अपनी रणनीतियों को लेकर पूरी तैयारी में जुटे हुए हैं।

कांग्रेस की बैठक में सबसे अधिक चर्चा जिन विषयों पर होने की संभावना है, उनमें प्रस्तावित परिसीमन (डिलिमिटेशन) प्रक्रिया प्रमुख मानी जा रही है। इस मुद्दे पर देश के विभिन्न राज्यों में अलग-अलग राजनीतिक दृष्टिकोण सामने आ रहे हैं। कांग्रेस इस विषय पर अपना स्पष्ट रुख तय करने के साथ-साथ यह भी विचार करेगी कि संसद में इस मुद्दे को किस प्रकार उठाया जाए। पार्टी यह सुनिश्चित करना चाहती है कि उसके सांसद इस विषय पर एक समान और स्पष्ट राजनीतिक संदेश दें।

इसके अलावा बैठक में महिला आरक्षण कानून के क्रियान्वयन से जुड़े संभावित संवैधानिक कदमों पर भी चर्चा हो सकती है। कांग्रेस पहले से ही महिला आरक्षण का समर्थन करती रही है, लेकिन पार्टी यह भी चाहती है कि इसके क्रियान्वयन की समय-सीमा और प्रक्रिया को लेकर सरकार से स्पष्ट जवाब मांगा जाए। यदि सरकार इस संबंध में कोई नया विधेयक या संवैधानिक संशोधन लाती है, तो उस पर कांग्रेस का आधिकारिक रुख भी इसी बैठक में तय किया जा सकता है।

सूत्रों के अनुसार, 'वन नेशन, वन इलेक्शन' से जुड़े प्रस्ताव भी बैठक के एजेंडे में शामिल रह सकते हैं। केंद्र सरकार इस विषय पर आगे बढ़ने के संकेत दे चुकी है और संभावना है कि मानसून सत्र में इससे संबंधित विधायी या नीतिगत पहल सामने आ सकती है। कांग्रेस इस प्रस्ताव के संवैधानिक, संघीय और व्यावहारिक पहलुओं पर विस्तार से विचार कर अपनी रणनीति तैयार करेगी।

बैठक में देश की आर्थिक स्थिति, महंगाई, बेरोजगारी, किसानों के मुद्दे, सामाजिक न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य, राज्यों के अधिकार, केंद्र-राज्य संबंध और विभिन्न प्रशासनिक निर्णयों पर भी चर्चा होने की संभावना है। कांग्रेस नेतृत्व चाहता है कि संसद में केवल राजनीतिक मुद्दों तक सीमित न रहकर आम जनता से जुड़े विषयों को भी मजबूती के साथ उठाया जाए। पार्टी का मानना है कि संसद सरकार से जवाब मांगने का सर्वोच्च लोकतांत्रिक मंच है और विपक्ष की जिम्मेदारी है कि वह जनहित के प्रश्नों को प्रभावी ढंग से उठाए।

संसदीय रणनीति के साथ-साथ कांग्रेस संगठनात्मक दृष्टि से भी मानसून सत्र को महत्वपूर्ण मान रही है। पार्टी नेतृत्व चाहता है कि संसद के भीतर उठाए गए मुद्दों को देशभर में जनसंपर्क अभियानों के माध्यम से जनता तक पहुंचाया जाए। इसके लिए संसद और संगठन के बीच बेहतर तालमेल बनाने पर भी विचार किया जाएगा। सांसदों को यह जिम्मेदारी भी दी जा सकती है कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में संसद में उठाए गए मुद्दों को लेकर संवाद कार्यक्रम आयोजित करें।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इस बार का मानसून सत्र कई कारणों से बेहद महत्वपूर्ण रहने वाला है। एक ओर सरकार अपने विधायी एजेंडे को आगे बढ़ाने की कोशिश करेगी, वहीं विपक्ष राष्ट्रीय मुद्दों पर सरकार को घेरने के लिए पूरी ताकत लगाएगा। ऐसे में कांग्रेस की यह रणनीतिक बैठक केवल संसदीय औपचारिकता नहीं, बल्कि आने वाले सत्र की राजनीतिक दिशा तय करने वाली महत्वपूर्ण कवायद मानी जा रही है।

बैठक से यह भी संकेत मिलने की संभावना है कि कांग्रेस आगामी महीनों में विपक्षी एकता को किस रूप में आगे बढ़ाना चाहती है। यदि विभिन्न विपक्षी दलों के बीच बेहतर समन्वय बनता है, तो संसद के भीतर सरकार के सामने अधिक संगठित चुनौती देखने को मिल सकती है। वहीं यदि विभिन्न मुद्दों पर विपक्ष की राय अलग-अलग रहती है, तो कांग्रेस को अपनी स्वतंत्र रणनीति के आधार पर आगे बढ़ना होगा।

मानसून सत्र से पहले होने वाली इस उच्चस्तरीय बैठक पर केवल कांग्रेस कार्यकर्ताओं ही नहीं, बल्कि पूरे राजनीतिक जगत की नजरें टिकी हुई हैं। बैठक में लिए गए निर्णय आने वाले संसदीय सत्र में कांग्रेस की भूमिका, विपक्ष की रणनीति और कई राष्ट्रीय मुद्दों पर राजनीतिक बहस की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण साबित हो सकते हैं। ऐसे में सोनिया गांधी के आवास पर होने वाला यह मंथन आगामी संसदीय सत्र का राजनीतिक स्वर तय करने वाली एक अहम बैठक के रूप में देखा जा रहा है।

पंजाब को विकास की बड़ी सौगात देंगे प्रधानमंत्री मोदी, रेलवे, हाईवे और कनेक्टिविटी परियोजनाओं पर 5,470 करोड़ रुपये का निवेश

चंडीगढ़। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शुक्रवार को पंजाब के एक दिवसीय दौरे पर राज्य को बुनियादी ढांचे और परिवहन क्षेत्र में बड़ी सौगात देने जा रहे हैं। इस दौरान वह 5,470 करोड़ रुपये से अधिक लागत वाली विभिन्न विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करेंगे। इन परियोजनाओं का उद्देश्य रेलवे नेटवर्क का आधुनिकीकरण, सड़क संपर्क को मजबूत करना और पंजाब को राष्ट्रीय परिवहन गलियारों से अधिक प्रभावी ढंग से जोड़ना है। प्रधानमंत्री का कार्यक्रम चंडीगढ़ और जालंधर में आयोजित होगा। इस वर्ष जालंधर का यह उनका दूसरा दौरा है। इससे पहले फरवरी में उन्होंने जालंधर स्थित डेरा सचखंड बल्लां पहुंचकर श्रद्धांजलि अर्पित की थी। प्रधानमंत्री का मुख्य कार्यक्रम जालंधर कैंट रेलवे स्टेशन पर आयोजित किया जाएगा, जहां वे केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत देशभर में पुनर्विकसित 75 रेलवे स्टेशनों का लोकार्पण करेंगे। इन स्टेशनों के आधुनिकीकरण पर लगभग 1,570 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं। इस योजना का उद्देश्य रेलवे स्टेशनों को आधुनिक यात्री सुविधाओं, बेहतर प्रतीक्षालयों, दिव्यांगजन अनुकूल व्यवस्थाओं, उन्नत प्रवेश द्वारों, डिजिटल सूचना प्रणाली और आकर्षक वास्तुशिल्प

के साथ विकसित करना है। पंजाब में इस योजना के अंतर्गत एसएएस नगर (मोहाली), श्री मुक्तसर साहिब और श्री आनंदपुर साहिब रेलवे स्टेशनों का भी पुनर्विकास किया गया है, जिनका उद्घाटन भी इसी अवसर पर होगा। रेल संपर्क को और मजबूत करने की दिशा में प्रधानमंत्री दौलतपुर चौक–करतोली नई रेल लाइन का भी उद्घाटन करेंगे। यह परियोजना नांगल डैम–तलवाड़ा–मुकेरियां नई रेल लाइन परियोजना का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसे लगभग 830 करोड़ रुपये की लागत से तैयार किया गया है। इस नई रेल लाइन से पंजाब और हिमाचल प्रदेश के बीच संपर्क बेहतर होगा तथा सीमावर्ती और पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को आवागमन की अधिक सुविधाएं मिलेंगी। इसके अलावा क्षेत्रीय व्यापार, पर्यटन और आर्थिक गतिविधियों को भी इससे नई गति मिलने की उम्मीद जताई जा रही है। प्रधानमंत्री इस अवसर पर अमृतसर (छेहरटा)–वाराणसी एक्सप्रेस को भी हरी झंडी दिखाएंगे। इस नई रेल सेवा के शुरू होने से उत्तर भारत के दो प्रमुख धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र—अमृतसर और वाराणसी—सीधे रेल मार्ग से जुड़ जाएंगे। इससे पंजाब, उत्तर प्रदेश और आसपास के राज्यों के श्रद्धालुओं तथा यात्रियों को सुविधाजनक यात्रा का नया विकल्प मिलेगा। साथ ही धार्मिक पर्यटन को भी बढ़ावा मिलने की संभावना है। सड़क अवसंरचना के क्षेत्र में भी प्रधानमंत्री कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं का शुभारंभ करेंगे। लगभग 3,070 करोड़ रुपये से अधिक लागत वाली राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं के उद्घाटन और शिलान्यास के माध्यम से राज्य में सड़क संपर्क को और मजबूत करने की दिशा में कदम उठाया जाएगा। इनमें दिल्ली–अमृतसर–कटरा एक्सप्रेसवे के 30.9 किलोमीटर लंबे पैकेज-6 का उद्घाटन प्रमुख है। यह ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे राष्ट्रीय राजधानी को पंजाब और जम्मू-कश्मीर से जोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण परियोजना मानी जा रही है। इसके पूरा होने से यात्रा का समय कम होगा, माल परिवहन तेज होगा और औद्योगिक गतिविधियों को नई गति मिलने की उम्मीद है। प्रधानमंत्री दक्षिणी लुधियाना बाईपास की आधारशिला भी रखेंगे। लगभग 25.2 किलोमीटर लंबे इस छह-लेन ग्रीनफील्ड बाईपास के निर्माण से लुधियाना शहर में भारी वाहनों का दबाव कम होगा, यातायात सुगम बनेगा और औद्योगिक परिवहन को बेहतर सुविधा मिलेगी। यह परियोजना राज्य के सबसे बड़े औद्योगिक शहरों में से एक लुधियाना की कनेक्टिविटी को आधुनिक बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। केंद्र सरकार के अनुसार, इन सभी परियोजनाओं का उद्देश्य पंजाब में परिवहन नेटवर्क को अधिक मजबूत, सुरक्षित और आधुनिक बनाना है। रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास से यात्रियों को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी, नई रेल लाइनों से दूरस्थ क्षेत्रों की पहुंच आसान होगी और राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं से व्यापार, उद्योग तथा पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। साथ ही निर्माण कार्यों के दौरान और परियोजनाओं के पूर्ण संचालन के बाद रोजगार के नए अवसर भी सृजित होने की संभावना है।

टीएमसी में जारी सियासी हलचल, राज्यसभा सदस्य रुक्मिणी (कोयल) मलिक का इस्तीफा; ममता बनर्जी के लिए बढ़ी राजनीतिक चुनौती

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल की राजनीति में तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के भीतर जारी राजनीतिक हलचल थमती नजर नहीं आ रही है। हाल के दिनों में पार्टी के कई नेताओं के अलग होने की चर्चाओं के बीच अब राज्यसभा सदस्य रुक्मिणी (कोयल) मलिक ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। उनके इस्तीफे को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और तृणमूल कांग्रेस के लिए एक महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाक्रम माना जा रहा है। हालांकि, उनके इस्तीफे के पीछे के कारणों को लेकर अभी तक आधिकारिक रूप से कोई विस्तृत जानकारी सामने नहीं आई है और न ही पार्टी की ओर से इस संबंध में कोई औपचारिक बयान जारी किया गया है। कोयल मलिक ने इसी वर्ष 6 अप्रैल 2026 को पश्चिम बंगाल का प्रतिनिधित्व करते हुए राज्यसभा सदस्य के रूप में शपथ ली थी। उन्हें तृणमूल कांग्रेस ने उच्च सदन के लिए नामित किया था और उनका कार्यकाल शुरू हुए अभी कुछ ही महीने हुए थे। ऐसे में उनका अचानक इस्तीफा राजनीतिक हलकों में चर्चा का विषय बन गया है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना

है कि इतने कम समय में राज्यसभा सदस्यता छोड़ना निश्चित रूप से पार्टी के लिए एक असहज स्थिति पैदा करता है, हालांकि उनके निर्णय के वास्तविक कारण आधिकारिक रूप से स्पष्ट होने के बाद ही स्थिति पूरी तरह साफ हो सकेगी।

पश्चिम बंगाल की राजनीति में पिछले कुछ समय से तृणमूल कांग्रेस के भीतर असंतोष और नेतृत्व से जुड़े विभिन्न मुद्दों को लेकर लगातार चर्चाएं होती रही हैं। इसी पृष्ठभूमि में कोयल मलिक का इस्तीफा ऐसे समय आया है, जब पार्टी के भीतर संगठनात्मक स्थिति को लेकर भी राजनीतिक बहस जारी है। विपक्षी दल इस घटनाक्रम को टीएमसी के लिए झटका बता रहे हैं, जबकि पार्टी नेतृत्व की ओर से अब तक इस पर कोई विस्तृत प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है।

राजनीति में आने से पहले कोयल मलिक बंगाली फिल्म उद्योग की सबसे लोकप्रिय अभिनेत्रियों में शुमार रही हैं। उन्हें टॉलीवुड की प्रमुख स्टार अभिनेत्रियों में गिना जाता है और पिछले दो दशकों में उन्होंने अनेक सफल फिल्मों में अभिनय किया है। बंगाली सिनेमा में उनकी लोकप्रियता और व्यापक जनपहचान को देखते हुए तृणमूल कांग्रेस ने उन्हें राज्यसभा भेजा था। उनके संसद पहुंचने को उस समय पार्टी की एक महत्वपूर्ण राजनीतिक और सांस्कृतिक पहल माना गया था।

अब उनके इस्तीफे के बाद राजनीतिक हलकों में यह चर्चा तेज हो गई है कि आगे उनका राजनीतिक रुख क्या होगा। फिलहाल उन्होंने भविष्य की राजनीतिक योजनाओं को लेकर कोई सार्वजनिक घोषणा नहीं की है। इसी तरह यह भी स्पष्ट नहीं है कि वे सक्रिय राजनीति में बनी रहेंगी या सार्वजनिक जीवन में किसी अन्य भूमिका का चयन करेंगी।

राज्यसभा सदस्य के इस्तीफे के बाद अब सभी की निगाहें तृणमूल कांग्रेस की आधिकारिक प्रतिक्रिया और आगे की राजनीतिक रणनीति पर टिकी हैं। साथ ही यह भी देखा जाएगा कि पार्टी इस रिक्त हुए संसदीय प्रतिनिधित्व को किस प्रकार भरती है और पश्चिम बंगाल की बदलती राजनीतिक परिस्थितियों में इसका क्या प्रभाव पड़ता है। फिलहाल कोयल मलिक का इस्तीफा राज्य की राजनीति में एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम के रूप में देखा जा रहा है।

शराब नीति मामले में बढ़ा कानूनी दबाव, हाईकोर्ट ने केजरीवाल सिसोदिया को जवाब दाखिल करने का अंतिम अवसर दिया

नई दिल्ली। दिल्ली की कथित आबकारी (शराब) नीति से जुड़े बहुचर्चित भ्रष्टाचार मामले में आम आदमी पार्टी के शीर्ष नेताओं की कानूनी चुनौतियां एक बार फिर बढ़ गई हैं। दिल्ली हाईकोर्ट ने गुरुवार को पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया और आप नेता दुर्गेश पाठक को केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) की याचिका पर जवाब दाखिल करने के लिए अंतिम अवसर प्रदान किया। अदालत ने स्पष्ट किया कि तीनों नेताओं को दो सप्ताह के भीतर अपना विस्तृत जवाब दाखिल करना होगा। सीबीआई ने निचली अदालत द्वारा तीनों नेताओं को बरी किए जाने के आदेश को चुनौती देते हुए हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। इस मामले की अगली सुनवाई 17 और 18 अगस्त को निर्धारित की गई है, जब अदालत सीबीआई की विस्तृत दलीलों पर सुनवाई करेगी।

दिल्ली की नई आबकारी नीति को लेकर शुरू हुआ यह विवाद पिछले कई वर्षों से देश की राजनीति और न्यायिक प्रक्रिया के केंद्र में बना हुआ है। इस मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और सीबीआई दोनों अलग-अलग पहलुओं की जांच कर रहे हैं। जहां ईडी धनशोधन (मनी लॉन्ड्रिंग) के आरोपों की जांच कर रही है, वहीं सीबीआई कथित भ्रष्टाचार और नीति निर्माण में अनियमितताओं से जुड़े आरोपों की पड़ताल कर रही है। इसी कड़ी में निचली अदालत ने हाल ही में कुछ आरोपियों को राहत देते हुए उन्हें बरी कर दिया था, जिसके खिलाफ सीबीआई ने हाईकोर्ट में अपील दाखिल की है।

गुरुवार को जब यह मामला दिल्ली हाईकोर्ट की न्यायमूर्ति मनोज जैन की एकल पीठ के समक्ष सुनवाई के लिए सूचीबद्ध हुआ, तब अदालत में एक असामान्य स्थिति उत्पन्न हो

गई। दिल्ली हाईकोर्ट बार एसोसिएशन की ओर से चल रहे कार्य बहिष्कार के कारण आरोपियों की ओर से कोई भी अधिवक्ता अदालत में उपस्थित नहीं हो सका। इस कारण मामले की विस्तृत सुनवाई संभव नहीं हो पाई। हालांकि अदालत ने इसे केवल तकनीकी कारण मानते हुए सुनवाई को आगे बढ़ा दिया, लेकिन साथ ही यह भी स्पष्ट कर दिया कि अब जवाब दाखिल करने के लिए इससे अधिक अवसर नहीं दिया जाएगा।

सुनवाई के दौरान सीबीआई की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने अदालत से अनुरोध किया कि मामले की सुनवाई में और देरी न की जाए। उन्होंने अदालत को बताया कि संबंधित पक्षों को पहले भी कई बार जवाब दाखिल करने का अवसर दिया जा चुका है, लेकिन अब तक जवाब प्रस्तुत नहीं किया गया है। उनके अनुसार इस कारण न्यायिक प्रक्रिया अनावश्यक रूप से लंबी होती जा रही है और मामले के शीघ्र निस्तारण के लिए निश्चित समयसीमा तय की जानी चाहिए।

सॉलिसिटर जनरल की दलीलों पर विचार करते हुए न्यायमूर्ति मनोज जैन ने कहा कि न्याय के सिद्धांतों के अनुसार प्रत्येक पक्ष को अपना पक्ष रखने का पर्याप्त अवसर मिलना चाहिए, लेकिन अदालत अनिश्चितकाल तक इंतजार भी नहीं कर सकती। इसी संतुलन को ध्यान में रखते हुए अदालत ने अरविंद केजरीवाल, मनीष सिसोदिया और दुर्गेश पाठक को दो सप्ताह के भीतर जवाब दाखिल करने का अंतिम अवसर दिया। अदालत ने स्पष्ट संकेत दिया कि इसके बाद मामले की सुनवाई आगे बढ़ाई जाएगी और उपलब्ध अभिलेखों के आधार पर प्रक्रिया जारी रहेगी।

सुनवाई के दौरान तुषार मेहता ने अदालत से यह भी आग्रह किया कि मामले की अगली तारीख अगस्त के मध्य के बजाय जुलाई के अंतिम सप्ताह या अगस्त के पहले सप्ताह में निर्धारित की जाए, ताकि सुनवाई में अनावश्यक विलंब न हो। हालांकि न्यायमूर्ति मनोज जैन ने अपनी व्यस्त न्यायिक सूची का उल्लेख करते हुए तत्काल नई तारीख देने में असमर्थता जताई। उन्होंने कहा कि उनके समक्ष पहले से सांसदों और विधायकों से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण मामले लंबित हैं, जिनकी नियमित सुनवाई चल रही है। इसलिए उपलब्ध समय के अनुसार ही इस मामले को सूचीबद्ध किया जा सकता है। फिर भी उन्होंने यह आश्वासन दिया कि यदि न्यायालय की कार्यसूची में कोई संभावना बनी तो सुनवाई की तारीख पहले करने पर विचार किया जाएगा।

दिल्ली की कथित शराब नीति का मामला पिछले कुछ वर्षों में देश के सबसे चर्चित राजनीतिक और कानूनी मामलों में शामिल रहा है। इस मामले को लेकर केंद्र और दिल्ली सरकार के बीच राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप भी लगातार होते रहे हैं। जांच एजेंसियों का आरोप है कि नई आबकारी नीति के निर्माण और उसके क्रियान्वयन में अनियमितताएं हुईं तथा कुछ निजी पक्षों को अनुचित लाभ पहुंचाया गया। दूसरी ओर आम आदमी पार्टी और उसके नेता लगातार इन आरोपों को राजनीतिक प्रेरित बताते हुए खारिज करते रहे हैं और दावा करते रहे हैं कि उनके खिलाफ कोई ठोस साक्ष्य नहीं है।

अब हाईकोर्ट में सीबीआई की चुनौती पर होने वाली सुनवाई इस पूरे मामले की अगली महत्वपूर्ण न्यायिक कड़ी मानी जा रही है। यदि अदालत सीबीआई की याचिका को सुनवाई योग्य मानते हुए आगे बढ़ती है, तो निचली अदालत के फैसले की वैधानिक समीक्षा होगी और मामले के विभिन्न कानूनी पहलुओं पर विस्तार से बहस होगी। वहीं यदि संबंधित नेता निर्धारित समय के भीतर अपना जवाब दाखिल करते हैं, तो अदालत दोनों पक्षों की दलीलों के आधार पर आगे की न्यायिक प्रक्रिया तय करेगी।

राजनीतिक दृष्टि से भी इस मामले पर देशभर की नजरें टिकी हुई हैं, क्योंकि इसमें दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया और आम आदमी पार्टी के अन्य वरिष्ठ नेताओं की भूमिका को लेकर लंबे समय से कानूनी और राजनीतिक बहस चल रही है। ऐसे में दिल्ली हाईकोर्ट की आगामी सुनवाई न केवल इस मामले की दिशा तय कर सकती है, बल्कि इससे जुड़े कई महत्वपूर्ण कानूनी प्रश्नों पर भी स्पष्टता आने की संभावना है। फिलहाल अदालत ने संबंधित नेताओं को अपना पक्ष रखने का अंतिम अवसर देते हुए दो सप्ताह की समयसीमा निर्धारित कर दी है और अब सभी की निगाहें 17 और 18 अगस्त को होने वाली अगली सुनवाई पर टिकी हैं।

संपादकीय

सुनें तार्किक विरोध

भारतीय लोकतंत्र की खूबसूरती रही है कि यहां हर अलग राय व असहमति को सम्मान मिला है। निश्चय ही यह दृष्टि लोकतंत्र को मजबूत ही करती है। जब हम कहते हैं कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है तो प्रतिरोध की आवाज को सुनने के लिये नीति-नियंताओं को बड़ा दिल भी दिखाना चाहिए। एक बार फिर इस भावना की परीक्षा तब हो रही है, जब हमारे देश में लाखों बच्चों का भविष्य तय करने वाली प्रतियोगिता परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं को लेकर सवाल उठे हैं। परीक्षा प्रणाली की शुचिता बनाये रखने के लिये शिक्षाविद् और इनोवेटर सोनम वांगचुक की भूख हड़ताल एक अहम मोड़ पर पहुंच गई है। उनकी बिगड़ती सेहत को लेकर देश में चिंता है। उनका वजन काफी कम हुआ है, रक्त शकर्रा कम हुई है और कमजोरी आने की बात कही जा रही है। निश्चित रूप से राजनीतिक प्रतिबद्धताओं से हटकर उनकी खराब होती सेहत हमारी चिंता का विषय होना चाहिए। निश्चय ही वांगचुक किसी राजनीतिक दल से संबंध नहीं रखते और न ही वे यह आंदोलन किसी निजी लाभ के लिये कर रहे हैं। वे भले ही छात्रों के भविष्य के मुद्दे को लेकर अस्तित्व में आई- 'कॉकरोच जनता पार्टी' के समर्थन में खड़े हुए हों, लेकिन उनकी चिंता के केंद्र में उन लाखों छात्रों का भविष्य है, जो प्रतियोगिता परीक्षाओं के तौर-तरीकों को लेकर अविश्वास जता रहे हैं। उनके आंदोलन के मूल में उन लाखों अभिभावकों की फिक्र है, जिनका भरोसा बार-बार पेपर लीक और परीक्षा प्रक्रियाओं में अनियमितताओं को लेकर डगमगा रहा है। कहना मुश्किल है कि लगाया जा रहा हर आरोप सही ही हो, लेकिन एक बात से तो इनकार नहीं किया जा सकता कि देश की कई महत्वपूर्ण प्रवेश परीक्षाओं में लोगों का विश्वास कम हुआ है। ऐसे में देश के नीति-नियंताओं को पारदर्शी सुधार लाकर और बेहतर जवाबदेही के माध्यम से दरके हुए विश्वास को जल्द बहाल करने की जरूरत है।

निर्विवाद रूप से ये लोकतंत्र का तकाजा भी है कि सत्ताधीशों को किसी लोकतांत्रिक व्यवस्था में उन नागरिकों की बात को भी सुनना चाहिए, जो नीतियों की विसंगतियों को लेकर सवाल उठा रहे हों। यह जानते हुए कि उनकी राजनीतिक दल विशेष से कोई प्रतिबद्धता नहीं है। निस्संदेह, देश में कोई भी सरकार जनता के अभिभावक के रूप में होती है। वैसे भी किसी शांतिपूर्ण विरोध की लंबे समय तक अनदेखी से आंदोलनकारियों और आम लोगों में सरकार के प्रति अविश्वास बढ़ता है। निस्संदेह, यदि आंदोलनकारियों से बातचीत की पहल होती है तो इसको उसकी कमजोरी नहीं कहा जाएगा। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भूख हड़ताल के नैतिक और चिकित्सीय पहलू भी होते हैं। सरकार की जिम्मेदारी बनती है कि वह आंदोलन कर रहे व्यक्ति की अभिव्यक्ति की आजादी का सम्मान करते हुए उसके जीवन की रक्षा करे। वहीं दूसरी ओर किसी भी चिकित्सीय हस्तक्षेप के दौरान कानून और चिकित्सा-संबंधी नैतिक नियमों का पालन किया जाना भी जरूरी है। इस बात में दो राय नहीं है कि मौजूदा गतिरोध से किसी का भी भला नहीं हो सकता। सही मायने में बातचीत की शुरुआत करने के लिये सरकार को हर मांग को पूरा करने की जरूरत भी नहीं है। वहीं दूसरी ओर आंदोलनकारियों को भी बातचीत को सार्थक बनाने के लिये प्रयासरत रहने की जरूरत है। ऐसे में समस्या के समाधान के लिये एक भरोसेमंद समिति और चिंताओं से जुड़े मुद्दों पर विचार करने के लिये एक तय समय-सीमा वाला रोडमैप, भरोसे की कमी को दूर करने में मददगार साबित हो सकता है। सही मायने में इस आंदोलन के मानवीय पक्ष पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए। यानी सरकार समझने की कोशिश करे कि इस आंदोलन के जन्म लेने के पीछे क्या भावनाएं काम कर रही थीं। साथ ही सरकार को शांतिपूर्ण विरोध के मूलभूत लोकतांत्रिक अधिकार का सम्मान करना चाहिए। निश्चित रूप से बातचीत के लिये किया गया कोई ईमानदार प्रयास गतिरोध को दूर करने में सहायक साबित हो सकता है। साथ ही इस बात की संवेदनशीलता का ध्यान रखना भी जरूरी है कि शासन की शिथिलता व उदासीनता की कीमत सोनम वांगचुक की सेहत को न चुकानी पड़े।

चीनी मठ-मंदिरों पर भी हेराफेरी की कालिख

> सरकारी समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के मुताबिक, डेढ़ महीना पहले दुनियाभर में मशहूर शाओलिन मंदिर के पूर्व प्रमुख शी योंगशिन को गबन और रिश्वत लेने जैसे अपराधों के लिए 24 साल जेल की सज़ा सुनाई गई है। शी पर 35 लाख युआन का जुर्माना भी लगाया गया।

ब्रूस ली की फ़िल्म 'एंटर द ड्रैगन' में शाओलिन मंदिर के शुरुआती दृश्यों की शूटिंग चीन में नहीं, बल्कि हांगकांग के थुएन मुन स्थित चिंग चुंग कून और कैसल पीक मठ में हुई थी। लेकिन, तब शाओलिन टैम्पल का अक्स दिलो-दिमाग़ में बैठा हुआ था। उसे देखना एक सपना था, जो 2019 में पेइचिंग कुछ हफ्ते ठहरने पर साकार हुआ। पेइचिंग से शाओलिन मंदिर की दूरी लगभग 773 किलोमीटर है। झेंगझोऊ तक बुलेट ट्रेन, फिर मंदिर तक जाने के लिए टैक्सी की ज़रूरत पड़ गई। इस जगह को 'मार्शल आर्ट का मक्का' मानिये। शाओलिन मंदिर चीन के हेनान प्रांत स्थित प्रसिद्ध बौद्ध मठ है। इसे 495 ईस्वी में बनाया गया था। यह ज़ेन बौद्ध धर्म का जन्मस्थान और मार्शल आर्ट (कुंग फू) का उद्गम स्थल है। सात साल पहले शाओलिन टैम्पल की दरो-दीवार को देखकर लगा नहीं था, कि यह भ्रष्टाचार का भी अड्डा रहा है।

सरकारी समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के मुताबिक, डेढ़ महीना पहले दुनियाभर में मशहूर शाओलिन मंदिर के पूर्व प्रमुख शी योंगशिन को गबन और रिश्वत लेने जैसे अपराधों के लिए 24 साल जेल की सज़ा सुनाई गई है। शी पर 35 लाख युआन का जुर्माना भी लगाया गया। चीन के मध्य हेनान प्रांत की शिनक्सियांग इंटरमीडिएट पीपल्स कोर्ट ने पाया कि शी (जिनका असली नाम लियू यिंगचेंग है) ने 2003 और 2025 के बीच 131 मिलियन युआन से ज़्यादा का गबन किया था।

कई दशकों तक, शी ने शाओलिन मंदिर के प्रमुख और शाओलिन चैरिटी एंड वेलफेयर फाउंडेशन के अध्यक्ष के तौर पर काम किया। जांच में पाया गया कि उन्होंने 2012 और 2022 के बीच 151 मिलियन युआन अपने निजी इस्तेमाल के लिए लिए थे, और 2006 से मंदिर के निर्माण और उससे जुड़े कामकाज के कॉन्ट्रैक्ट दिलाने में मदद करने के बदले कुल 11.63 मिलियन युआन की रिश्वत ली थी। कोर्ट की घोषणा के अनुसार, शी पर 1995 और 2022 के बीच 'गलत फ़ायदे' पाने के लिए अधिकारियों को 5.67 मिलियन युआन से ज़्यादा की रिश्वत देने का भी आरोप है। चीन के मशहूर बौद्ध मठ शाओलिन मंदिर के प्रमुख के ख़िलाफ़ आपराधिक जांच में कहा गया है कि उनके कामों में गबन, फ़ंड का गलत इस्तेमाल, रिश्वत लेना और देना जैसे संगीन अपराध शामिल थे, और इन सभी में 'बहुत बड़ी रकम' शामिल थी। शी पर आरोप था कि उन्होंने 'कई महिलाओं के साथ लंबे समय तक गलत संबंध बनाए, और नाजायज़ बच्चों के पिता बने।' पिछले साल जुलाई में सरकार की संयुक्त जांच के बाद उन्हें वाइस-चेयरपर्सन पद से हटा दिया गया था। उसी महीने, चीन के बौद्ध संघ ने शी योंगशिन की बौद्ध मान्यता रद्द कर दी, और उन पर 'बौद्ध समुदाय की प्रतिष्ठा और भिक्षुओं की छवि को गंभीर रूप से नुकसान पहुंचाने' का आरोप लगाया। उनसे जुड़ी कंपनियों का रजिस्ट्रेशन भी रद्द कर दिया गया। जांच के बाद, स्थानीय अधिकारियों ने नवंबर, 2025 में कई आपराधिक आरोपों में उनकी गिरफ़्तारी को मंजूरी देने की घोषणा की। शी ने अपना अपराध माना, और पछतावा व्यक्त किया। 29 मई, 2026 को कोर्ट ने यह भी जानकारी दी, कि शी ने कोई अपील नहीं की। चीन में 1960 और 1970 के दशक की सांस्कृतिक क्रांति में अनगिनत धार्मिक जगहें तबाह हो गईं। मठों से उनकी संपत्ति छीन ली गई थी। लेकिन, जैसे ही 1980 के दशक में चीन में आर्थिक सुधार और खुलेपन का दौर शुरू हुआ, मंदिर फिर से चलन में आ गए. कई लोग अपना गुज़ारा करने के लिए टैम्पल टूरिज़्म की तरफ़ मुड़ गए।

हालांकि, चीनी सरकार धार्मिक मान्यताओं की आज़ादी का समर्थन करती है, और 1.3 अरब से ज़्यादा लोगों को अपनी धार्मिक मान्यताएं चुनने का अधिकार है। खासकर आधुनिक चीनी समाज में राजनीतिक दमन खत्म होने के बाद, लंबे समय से दबी हुई धार्मिक मान्यताएं सामने आईं। 'वर्ल्ड वैल्यूज़ सर्वे-2007' से पता चलता है कि 11 प्रतिशत चीनी लोगों की धार्मिक मान्यताएं हैं। 2003 से 2010 के बीच इनकी आबादी 120 फीसद बढ़ी है। इस समय में जिन बड़े मठाधीशों को निजी रूप से फ़ायदा हुआ, उनमें शी सबसे बड़े थे। शी योंगशिन 1981 में 16 साल की उम्र में हेनान प्रांत के शाओलिन मंदिर में शामिल हुए थे। उस समय, मंदिर खंडहर बन चुका था। लेकिन, जैसे-जैसे शी मठाधीश के पद पर पहुंचे, उन्होंने प्रार्थना हॉल फिर से खोलने और टूरिस्ट को टिकट बेचने के लिए लोकल अधिकारियों से बातचीत की। जल्द ही, लाखों लोग आने लगे, जिसमें लोकल सरकार 70 प्रतिशत हिस्सेदारी थी। तब शाओलिन-ब्रांडेड सामान बेचने वाली गिफ़्ट शॉप भी खुल गईं, और शाओलिन इंक का जन्म हुआ।

वर्ष 2006 में, डेंगफ़ेंग शहर की सरकार ने शाओलिन मंदिर के लिए 100,000 डॉलर का निवेश किया। चीन की सरकारी समाचार एजेंसी शिन्हुआ ने 2015 में बताया था शी को 'सीईओ भिक्षु' के तौर पर जाना जाता था; कुंग-फू शो और सामान को बढ़ावा देने के लिए कमर्शियल गतिविधियां शुरू करने की वजह से उनकी आलोचना भी हुई थी। सरकारी मीडिया की रिपोर्ट के मुताबिक, 2002 में शी को बुद्धिस्ट एसोसिएशन ऑफ़ चाइना का वाइस-चेयरपर्सन चुना गया था। गिरफ़्तार होने से पहले, शी योंगक्सिन ने विदेशों में दर्जनों कंपनियां बनाईं, और ऑस्ट्रेलिया में 300 मिलियन डॉलर के लक्ज़री होटल और गोल्फ़ कोर्स कॉम्प्लेक्स के लिए फ़ंड जुटाने की कोशिश की।

चीन में लगभग 33,500 पंजीकृत बौद्ध और 9,000 ताओ मंदिर हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार कुल धार्मिक स्थलों की संख्या लगभग 144,000 है। इसके अलावा, अनौपचारिक या छोटे पारंपरिक पूजा स्थलों की संख्या 192,000 से भी अधिक है। चीन की अदालतें मंदिरों के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामलों के सटीक और सार्वजनिक आंकड़े जारी नहीं करती हैं।

चीन के मंदिरों में करप्शन का यह पहला मामला नहीं था। 2018 में, पेइचिंग के मशहूर लोंगक्वान मंदिर के मठाधीश और उस समय बुद्धिस्ट एसोसिएशन ऑफ़ चाइना के अध्यक्ष रहे ज़्यू चेंग 'मी-टू' रिपोर्ट के आने के बाद पद से हटा दिये गए थे। सरकारी जांच में इसकी पुष्टि हुई, कि उन्होंने महिला शिष्याओं पर दबाव बनाने के लिए अश्लील मैसेज भेजे थे; साथ ही, मंदिर के फंड का भारी-भरकम हिसाब-किताब न होने और संपत्ति के गैर-कानूनी विस्तार का भी खुलासा हुआ। शी के पतन से चीन के भिक्षुओं की प्रतिष्ठा को बड़ा झटका लगा है, जिसके बाद कई संस्थागत सुधार शुरू किए गए हैं। चीन में सरकार की सरपरस्ती पाकर बड़े बौद्ध भिक्षु अक्सर कॉर्पोरेट अधिकारियों की तरह काम करते हैं। किसी बड़े काण्ड का खुलासा न हो, तो मठाधीशों का गोरखधंधा चलता रहता है!

प्रेरणा

कर्म की ज्योति ही सबसे बड़ा परिचय

इतिहास इस बात का साक्षी है कि संसार में जिन लोगों ने अपने जीवन को महान बनाया, उन्होंने कभी अपने यश का ढिंढोरा नहीं पीटा। वे जानते थे कि व्यक्ति की पहचान उसके शब्दों से नहीं, बल्कि उसके कर्मों से होती है। समय बीत जाने के बाद भाषण भुला दिए जाते हैं, लेकिन श्रेष्ठ कर्म पीढ़ियों तक प्रेरणा बनकर जीवित रहते हैं। यही कारण है कि भारत की महान परंपरा में कर्म को पूजा और कर्तव्य को धर्म माना गया है। जब मनुष्य बिना किसी स्वार्थ, बिना किसी प्रसिद्धि की लालसा और बिना किसी प्रशंसा की अपेक्षा के अपने दायित्व का निर्वाह करता है, तभी उसका जीवन वास्तव में सार्थक बनता है।

ऐसे ही कर्मयोगी थे गोपालकृष्ण गोखले। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में उनका नाम केवल एक राजनीतिक नेता के रूप में नहीं, बल्कि एक महान चिंतक, समाज सुधारक, शिक्षक और आदर्श मार्गदर्शक के रूप में लिया जाता है। उन्होंने अपने जीवन से यह सिद्ध किया कि सच्चा नेतृत्व वही है, जो स्वयं उदाहरण बनकर दूसरों को प्रेरित करे। उनकी विनम्रता, दूरदर्शिता और राष्ट्र के प्रति समर्पण ने उन्हें अपने समय के सबसे सम्मानित नेताओं में स्थान दिलाया।

उस समय भारत अंग्रेजी शासन की कठोर नीतियों से जूझ रहा था। देश के अनेक हिस्सों में स्वतंत्रता की चेतना जाग रही थी। लोग अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे थे। इसी दौर में गोपालकृष्ण गोखले अपने विचारों और लेखनी के माध्यम से जनमानस को जागृत कर रहे थे। वे 'केसरी' तथा 'मराठा' जैसे प्रभावशाली समाचार पत्रों से जुड़े रहे और उनके माध्यम से ब्रिटिश शासन की नीतियों की तार्किक और निर्भीक आलोचना करते थे। उनके लेख केवल विरोध के लिए नहीं होते थे, बल्कि उनमें राष्ट्र निर्माण का स्पष्ट दृष्टिकोण दिखाई देता था।

सन 1906 में कलकत्ता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन आयोजित हुआ। यह वह समय था जब स्वतंत्रता आंदोलन नई दिशा तलाश रहा था। देशभर से आए नेताओं, बुद्धिजीवियों और युवाओं के बीच उत्साह भी था और बेचैनी भी। अनेक युवा देश की सेवा करना चाहते थे, लेकिन उनमें से कुछ ऐसे भी थे जो हर सभा में अपनी बात की सराहना चाहते थे। वे चाहते थे कि लोग उनकी प्रशंसा करें, उनके भाषणों की चर्चा हो और उन्हें तुरंत पहचान मिल जाए। सेवा के साथ-साथ उनके मन में प्रसिद्धि की इच्छा भी प्रबल थी।

गोपालकृष्ण गोखले अनुभवी थे। वे मानव स्वभाव को भली-भांति समझते थे। उन्होंने युवाओं की इस अधीरता को देखा और उन्हें डांटने या निराश करने के बजाय एक अत्यंत सरल, किंतु जीवन बदल देने वाला उदाहरण दिया। उन्होंने आकाश की ओर संकेत करते हुए कहा— "देखो, यह सूर्य कभी स्वयं अपने प्रकाश की घोषणा नहीं करता। वह यह नहीं कहता कि मैं संसार को उजाला दे रहा हूँ। वह केवल अपना कार्य करता है। उसका प्रकाश स्वयं उसकी पहचान बन जाता है। ठीक इसी प्रकार यदि तुम निष्ठा और ईमानदारी से राष्ट्र की सेवा करते रहोगे, तो तुम्हारे कर्म ही तुम्हारा परिचय बन जाएंगे। तुम्हें स्वयं अपने गुणों का प्रचार करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।"

यह छोटी-सी सीख केवल उस समय उपस्थित युवाओं के लिए ही नहीं थी, बल्कि आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। आधुनिक समय में व्यक्ति अक्सर अपने कार्य से अधिक उसके प्रचार पर ध्यान देता है। सामाजिक जीवन हो या डिजिटल माध्यम, अनेक लोग पहले अपनी उपलब्धि दिखाना चाहते हैं और बाद में उसे प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। प्रसिद्धि की दौड़ ने धैर्य और समर्पण को पीछे छोड़ दिया है। ऐसे समय में गोखले का संदेश हमें याद दिलाता है कि असली पहचान प्रचार से नहीं, बल्कि चरित्र और कर्म से बनती है।

भारतीय दर्शन भी इसी सत्य को स्वीकार करता है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि मनुष्य का अधिकार केवल कर्म करने में है, फल की चिंता करने में नहीं। जब व्यक्ति निष्काम भाव से अपना कार्य करता है, तब उसका प्रत्येक कर्म समाज के लिए प्रेरणा बन जाता है। फल की चिंता और प्रशंसा की इच्छा मनुष्य को उसके लक्ष्य से भटका देती है, जबकि कर्तव्य के प्रति समर्पण उसे महान बना देता है।

गोपालकृष्ण गोखले स्वयं इस सिद्धांत का जीवंत उदाहरण थे। उन्होंने कभी व्यक्तिगत प्रसिद्धि के लिए राजनीति नहीं की। उनका उद्देश्य केवल भारत की प्रगति और जनता का कल्याण था। उन्होंने शिक्षा के प्रसार, सामाजिक सुधार और राजनीतिक जागरूकता के लिए निरंतर कार्य किया। उनका मानना था कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक अधिकार प्राप्त करने से नहीं आएगी, बल्कि शिक्षित, जागरूक और नैतिक समाज के निर्माण से ही सच्ची स्वतंत्रता संभव होगी। उनकी इसी महानता का प्रभाव था कि महात्मा गांधी उन्हें अपना राजनीतिक गुरु मानते थे। जब गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे, तब उन्होंने सबसे पहले गोखले से मार्गदर्शन प्राप्त किया। गांधीजी ने स्वीकार किया कि गोखले ने उन्हें भारतीय समाज, राजनीति और जनता की वास्तविक परिस्थितियों को समझने की दृष्टि दी। गांधी के सत्य, सेवा और सादगी के पीछे कहीं न कहीं गोखले की शिक्षा और प्रेरणा भी दिखाई देती है। केवल महात्मा गांधी ही नहीं, बल्कि मुहम्मद अली जिन्ना भी गोखले का अत्यंत सम्मान करते थे। वैचारिक मतभेदों के बावजूद गोखले की निष्पक्षता, विद्वता और नैतिकता ने उन्हें सभी पक्षों में आदर का पात्र बनाया। यह किसी भी नेता की सबसे बड़ी उपलब्धि होती है कि विरोधी विचारधारा के लोग भी उसके चरित्र और ईमानदारी की सराहना करें। गोखले ने यह सम्मान अपने शब्दों से नहीं, बल्कि अपने कर्मों से अर्जित किया था।

आज के समय में यह शिक्षा और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। हम ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ त्वरित प्रसिद्धि को सफलता का पर्याय मान लिया गया है। लोग अपने हर छोटे कार्य का प्रदर्शन करने लगे हैं। लेकिन इतिहास हमें बताता है कि जिन लोगों ने संसार को बदला, वे प्रचार की रोशनी में नहीं, बल्कि कर्म की तपस्या में जीते थे। स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, डॉ. भीमराव आंबेडकर, लाल बहादुर शास्त्री, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम और अनेक महान विभूतियों ने कभी अपनी महानता की घोषणा नहीं की। उनके कार्य ही उनके परिचय बन गए।

यदि कोई विद्यार्थी मन लगाकर अध्ययन करता है, तो उसकी सफलता स्वयं बोलती है। यदि कोई शिक्षक पूरी निष्ठा से शिक्षा देता है, तो उसके शिष्य उसकी पहचान बन जाते हैं। यदि कोई चिकित्सक ईमानदारी से रोगियों की सेवा करता है, तो लोगों का विश्वास ही उसका सबसे बड़ा सम्मान बन जाता है। यदि कोई पत्रकार सत्य और निष्पक्षता के साथ अपना दायित्व निभाता है, तो उसकी विश्वसनीयता किसी पुरस्कार से कहीं अधिक मूल्यवान होती है। यही सिद्धांत जीवन के हर क्षेत्र में लागू होता है। गोपालकृष्ण गोखले का संदेश केवल राष्ट्रसेवा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह प्रत्येक व्यक्ति के दैनिक जीवन का मार्गदर्शन करता है।

रूस-भारत की परमाणु साझेदारी में सेंध? क्यों कुडनकुलम फिर से सुर्खियों में है

भारत के सबसे बड़े न्यूक्लियर पावर प्लांट कुडनकुलम का नाम एक बार फिर चर्चा में है और इस बार वजह कोई तकनीकी खराबी नहीं बल्कि एक कथित डाटा ब्रिज जिसने देश के एक बड़े इंफ्रा की साइबर सुरक्षा को लेकर नए सवाल खड़े कर दिए हैं। दरअसल दावा है कि डाक पेप पर करीब 858,000 फाइलें अपलोड की गई हैं। जिसमें से लगभग 19,000 फाइलें कुडनकुलम न्यूक्लियर पावर प्लांट से जुड़ी बताई जा रही हैं। ऐसे में लोगों के मन में कई तरह के सवाल आ रहे हैं कि क्या भारत का न्यूक्लियर पावर प्लांट हैक हो गया है या फिर रिएक्टर का डाटा लीक हुआ है या मामला कुछ और है। यह मामला सीधे एनपीसीआईएल यानी न्यूक्लियर पावर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया के सर्वर से डाटा चोरी का नहीं है। दरअसल कुडनकुलम न्यूक्लियर पावर प्लांट के यूनिट थ्री और यूनिट 4 के कुछ इंफ्रा का ईपीसी कॉन्ट्रैक्ट साल 2018 में Reliance infra को दिया गया था। इसी कंपनी के डाटा में सेंध लगने का दावा सामने आया है। खुद Reliance ने स्वीकार किया कि उसके डाटा में आंशिक यानी कि पार्शियल ब्रीच हुआ है और इसकी जानकारी सरकार को दे दी गई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक Reliance का डाटा भारतीय डाटा सेंटर कंपनी यो के सर्वर पर होस्ट था। योटा का कहना है कि 29 मई को उसे सर्वर पर संदिग्ध गतिविधियां दिखी थी और संभावित रैंसमवेयर को उसी समय रोक दिया गया था। लेकिन जून के आखिर में Reliance ने उसे बताया कि बाहरी हमलावर डाटा चोरी का दावा कर रहे हैं। इसके बाद पूरे मामले की जांच शुरू हुई। इस पूरे मामले के पीछे जिस समूह का नाम सामने आया है, उसका नाम वर्ल्ड लीग्स है। यह एक कुख्यात रसमवेयर गिरोह है। इसका तरीका आमतौर पर यह होता है कि पहले किसी कंपनी का डाटा चुराया जाता है। फिरौती मांगी जाती है और अगर पैसे नहीं मिलते तो चोरी किया गया डाटा डाक पर सार्वजनिक कर दिया जाता है। इससे पहले यह गिरोह Tata समूह समेत कई बड़ी कंपनियों को निशाना बना चुका है। अब सवाल कि आखिरकार लीक क्या हुआ है? रर्स की रिपोर्ट के मुताबिक डाक वेब पर मौजूद दस्तावेजों में कथित तौर पर यूनिट थ्री और यूनिट फोर से जुड़े वेंटिलेशन और कूलिंग सिस्टम के ब्लूप्रिंट सप्लाई की सूची, मीटिंग रिकॉर्ड, जॉइंट इंस्पेक्शन रिपोर्ट, उपकरणों की समीक्षा और बीमा से जुड़े दस्तावेज शामिल हैं। हालांकि रॉयर्स ने साफ कहा कि वह इन दस्तावेजों की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं करता। एक रैनसमवेयर और जबरन वसूली (extortion) करने वाले समूह 'वर्ल्ड लीक्स' (World Leaks) द्वारा कथित तौर पर इस डेटा लीक को अंजाम दिया गया है, जिसने अपने डार्क वेब प्लेटफॉर्म पर चोरी की गई फाइलों का एक बड़ा जखीरा प्रकाशित किया है। साइबर सुरक्षा शोधकर्ताओं (researchers) ने कहा कि इस समूह ने लगभग 19,000 फाइलों का एक संग्रह जारी किया है, जिसका कुल आकार (डेटा) करीब 14.3 GB है। इन फाइलों में केकेएनपीपी (KKNPP - कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा संयंत्र) से जुड़े संदर्भ मिले हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, लीक हुए दस्तावेज 2016 से लेकर 2025 के मध्य तक की अवधि के हैं और ये इस परियोजना के निर्माण (construction) और संचालन (operations) के विभिन्न पहलुओं के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करते हैं।

कूलिंग (शीतलन) और वेंटिलेशन (हवादार) प्रणालियों से जुड़े इंजीनियरिंग चित्र (Drawings)

एक कॉमन कंट्रोल रूम (सामान्य नियंत्रण कक्ष) के लेआउट प्लान

भारतीय और रूसी इंजीनियरों के बीच बैठकों के मिनट्स (विवरण) और संयुक्त निरीक्षण रिपोर्ट

वेंडर (विक्रेता) के विवरण, उपकरण प्रस्ताव और आपूर्तिकर्ताओं (suppliers) की जानकारी

आंतरिक बीमा दस्तावेज, जिसमें निर्माणाधीन इकाइयों के लिए कथित तौर पर $112 मिलियन (11.2 करोड़ डॉलर) की संयुक्त आतंकवाद क्षतिपूर्ति नीति (joint terror indemnity policy) भी शामिल है।

दक्षिण-एशियाईऔर प्रवासी

भारत के न्यूक्लियर इंफ्रास्ट्रक्चर पर संभावित खतरे की चिंताओं के बीच, एनपीसीआईएल ने एक बयान जारी कर स्पष्ट किया कि लीक हुए दस्तावेज़ रिएक्टर सेफ्टी सिस्टम से जुड़े नहीं थे। कंपनी ने कहा कि यह जानकारी केवल कुडनकुलम यूनिट 3 और 4 के लिए 'बैलेंस ऑफ़ प्लांट' (BoP) कॉमन सर्विस सुविधाओं से संबंधित थी, जिनका निर्माण अभी चल रहा है। एनपीसीआईएल ने कहा ये सुविधाएं पारंपरिक किस्म की हैं और आमतौर पर थर्मल पावर प्लांट के साथ-साथ अन्य प्रोसेस इंडस्ट्रीज़ में भी पाई जाती हैं। इनका न्यूक्लियर सेफ्टी या न्यूक्लियर सिक्योरिटी सिस्टम से कोई संबंध नहीं है। अधिकारियों ने बताया कि इस तरह के इंफ्रास्ट्रक्चर में बाहरी वेंटिलेशन सिस्टम, पानी की आपूर्ति नेटवर्क और अन्य सहायक सेवाएं जैसी सुविधाएं शामिल होती हैं, जिनके डिज़ाइन अक्सर बड़े निर्माण प्रोजेक्ट्स के दौरान सिविलियन कॉन्ट्रैक्टर्स के साथ साझा किए जाते हैं। अधिकारियों ने बताया कि रूसी डिज़ाइन वाले VVER-1000 प्रेशराइज़्ड वॉटर रिएक्टर समेत मुख्य रिएक्टर सिस्टम कॉन्ट्रैक्टर नेटवर्क से अलग रखे गए हैं। ताज़ा घटना कुडनकुलम प्लांट के सामने आई पहली साइबर सुरक्षा चुनौती नहीं है। 2019 में प्लांट में Dtrack मैलवेयर के ज़रिए साइबर घुसपैठ की बात सामने आई थी। साइबर सुरक्षा कंपनियों ने इसे उत्तर कोरिया के सरकारी समर्थन वाले 'लाज़रस ग्रुप' से जोड़ा था। यह मैलवेयर प्लांट के लोकल नेटवर्क से जुड़े एक एडमिनिस्ट्रेटिव कंप्यूटर पर पाया गया था। जांचकर्ताओं के अनुसार, यह सिस्टम की जानकारी, की-स्ट्रोक और नेटवर्क की डिटेल्स इकट्ठा करने में सक्षम था। उस समय, NPCIL ने शुरुआत में घुसपैठ की खबरों से इनकार किया था, लेकिन बाद में पुष्टि की कि एक एडमिनिस्ट्रेटिव सिस्टम प्रभावित हुआ था। कंपनी का कहना था कि रिएक्टर कंट्रोल सिस्टम अलग-अलग, आइसोलेटेड नेटवर्क से सुरक्षित थे जो इंटरनेट से जुड़े नहीं थे। हाल ही में हुई सुरक्षा चूक ने रिएक्टर कंट्रोल रूम के बाहर साइबर सुरक्षा जोखिमों को लेकर फिर से सवाल खड़े कर दिए हैं। हालांकि भारत का परमाणु ऊर्जा विभाग परमाणु गतिविधियों के लिए कड़े सुरक्षा उपाय करता है, लेकिन बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स में अक्सर कई प्राइवेट कंपनियां, कॉन्ट्रैक्टर और क्लाउड सर्विस प्रोवाइडर शामिल होते हैं।

अभियान

भारत के 7 दिव्य मंदिर, जिनसे जुड़ी हैं आरोग्य, मानसिक शांति और जीवन में नई उम्मीद की लोकमान्यताएं

भारत की सभ्यता में मंदिर केवल धार्मिक आस्था के केंद्र नहीं रहे हैं, बल्कि वे सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन की धुरी भी रहे हैं। सदियों से लोग इन पवित्र स्थलों पर केवल पूजा-अर्चना करने के लिए नहीं, बल्कि अपने मन का बोझ हल्का करने, जीवन की कठिनाइयों से जूझने का साहस पाने और ईश्वर के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करने के लिए भी पहुंचते रहे हैं। भारतीय परंपरा में यह विश्वास गहराई से जुड़ा है कि जब मन शांत होता है, तब व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों का सामना अधिक दृढ़ता से कर सकता है। यही कारण है कि आज भी लाखों श्रद्धालु आधुनिक चिकित्सा का लाभ लेने के साथ-साथ मंदिरों में जाकर ईश्वर से स्वास्थ्य, सुख, मानसिक संतुलन और पारिवारिक कल्याण की प्रार्थना करते हैं। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि किसी भी शारीरिक या मानसिक बीमारी का उपचार योग्य चिकित्सक की सलाह और वैज्ञानिक चिकित्सा से ही कराया जाना चाहिए। मंदिरों से जुड़ी मान्यताएं श्रद्धा और व्यक्तिगत विश्वास का विषय हैं, जिन्हें लोग अपनी आध्यात्मिक अनुभूति के रूप में स्वीकार करते हैं।

भारत के अलग-अलग राज्यों में स्थित कुछ मंदिर ऐसे हैं, जिनके बारे में वर्षों से यह लोकविश्वास चला आ रहा है कि वहां सच्चे मन से प्रार्थना करने पर श्रद्धालुओं को मानसिक शक्ति, आत्मविश्वास और सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव होता है। इन मंदिरों की लोकप्रियता का कारण केवल उनकी धार्मिक महत्ता नहीं, बल्कि उनसे जुड़ी वे भावनाएं हैं, जिन्होंने पीढ़ियों से करोड़ों लोगों के मन में आशा का दीप जलाए रखा है। आइए जानते हैं ऐसे सात प्रमुख मंदिरों के बारे में, जो अपनी विशेष मान्यताओं के कारण देशभर में प्रसिद्ध हैं।

झारखंड के देवघर में स्थित बैद्यनाथ धाम भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक अत्यंत पवित्र तीर्थ है। भगवान शिव यहां वैद्यनाथ अर्थात रोगों के निवारक के रूप में पूजे जाते हैं। पौराणिक कथाओं में उल्लेख मिलता है कि भगवान शिव ने यहां अपने भक्तों के कष्ट दूर करने के लिए वैद्य का स्वरूप धारण किया था। इसी कारण इस धाम का नाम बैद्यनाथ पड़ा। हर वर्ष श्रावण मास में लाखों श्रद्धालु सुल्तानगंज से गंगाजल लेकर पैदल यात्रा करते हुए देवघर पहुंचते हैं और जलाभिषेक करते हैं। यह कठिन यात्रा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि श्रद्धा, अनुशासन और आत्मसंयम की मिसाल मानी जाती है। भक्तों का विश्वास है कि यहां भगवान शिव के दर्शन और पूजा से मानसिक शांति, आत्मबल तथा जीवन की कठिनाइयों से लड़ने की प्रेरणा मिलती है। अनेक श्रद्धालु इसे अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन का आध्यात्मिक अनुभव बताते हैं।

राजस्थान के दौसा जिले में स्थित मेहंदीपुर बालाजी मंदिर देश के सबसे प्रसिद्ध हनुमान मंदिरों में गिना जाता है। भगवान हनुमान के बालाजी स्वरूप को समर्पित यह मंदिर अपनी विशिष्ट धार्मिक परंपराओं के कारण पूरे देश में जाना जाता है। यहां प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंचते हैं। लोकमान्यताओं के अनुसार, यहां की विशेष पूजा और आरती से भय, चिंता, मानसिक अशांति और नकारात्मक विचारों से मुक्ति की प्रार्थना की जाती है। मंदिर की एक अनोखी परंपरा यह भी है कि यहां का प्रसाद श्रद्धालु अपने घर नहीं ले जाते। यह परंपरा वर्षों से चली आ रही है और इसके पीछे स्थानीय धार्मिक मान्यताएं जुड़ी हुई हैं। मंदिर का वातावरण, सामूहिक आरती और भक्तों की अटूट श्रद्धा यहां आने वाले लोगों को गहरा आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करती है।

हिमाचल प्रदेश की शिवालिक पर्वत श्रृंखला में स्थित श्री नैना देवी मंदिर भारत के प्रमुख शक्तिपीठों में शामिल है। पौराणिक मान्यता के अनुसार, यहां माता सती के नेत्र गिरे थे, इसलिए इस स्थान को नैना देवी कहा जाता है। देवी को ज्ञान, विवेक और दिव्य दृष्टि की अधिष्ठात्री माना जाता है। यहां आने वाले श्रद्धालु जीवन में सही निर्णय लेने की क्षमता, मानसिक स्पष्टता और सकारात्मक सोच की कामना करते हैं। स्थानीय लोकविश्वासों में आंखों से संबंधित समस्याओं के लिए भी देवी का आशीर्वाद विशेष माना जाता है, हालांकि इसका कोई चिकित्सकीय प्रमाण उपलब्ध नहीं है। पर्वतों की गोद में स्थित यह मंदिर अपने प्राकृतिक सौंदर्य और आध्यात्मिक वातावरण के कारण भी विशेष आकर्षण का केंद्र है। यहां पहुंचने वाले अनेक श्रद्धालु बताते हैं कि मंदिर का शांत वातावरण उनके मन को गहरा सुकून देता है। उत्तर प्रदेश के वाराणसी में स्थित काशी विश्वनाथ मंदिर सनातन परंपरा के सबसे महत्वपूर्ण शिव मंदिरों में से एक है। काशी को भगवान शिव की नगरी माना जाता है और यहां का आध्यात्मिक वातावरण सदियों से साधकों, संतों और श्रद्धालुओं को आकर्षित करता रहा है। गंगा के तट पर स्थित इस प्राचीन मंदिर में प्रतिदिन लाखों लोग दर्शन के लिए पहुंचते हैं। भक्तों का विश्वास है कि भगवान विश्वनाथ के समक्ष की गई सच्ची प्रार्थना व्यक्ति के मन को शांति, आत्मविश्वास और आध्यात्मिक संतुलन प्रदान करती है। गंगा आरती, मंदिर की घंटियों की ध्वनि और वैदिक मंत्रों का वातावरण श्रद्धालुओं को गहरे आध्यात्मिक अनुभव से जोड़ देता है। कई लोग मानते हैं कि काशी की यात्रा उन्हें जीवन की भागदौड़ से कुछ समय के लिए दूर ले जाकर आत्मचिंतन का अवसर देती है।

तमिलनाडु के तंजावुर जिले में स्थित गर्भरक्षाम्बिगई मंदिर विशेष रूप से मातृत्व और संतान प्राप्ति से जुड़ी मान्यताओं के लिए प्रसिद्ध है। यहां देवी गर्भरक्षाम्बिगई की पूजा की जाती है, जिन्हें गर्भ की रक्षा करने वाली माता के रूप में श्रद्धापूर्वक स्मरण किया जाता है। देश के विभिन्न हिस्सों से दंपति यहां सुरक्षित गर्भावस्था और स्वस्थ संतान की कामना लेकर पहुंचते हैं। मंदिर में विशेष पूजा-विधि और परंपराएं हैं, जिनका पालन श्रद्धालु अपनी आस्था के अनुसार करते हैं। हालांकि सुरक्षित मातृत्व के लिए नियमित चिकित्सकीय जांच, पोषण और विशेषज्ञ डॉक्टरों की सलाह अनिवार्य है, फिर भी अनेक परिवार इस मंदिर के दर्शन को अपने आध्यात्मिक विश्वास का महत्वपूर्ण हिस्सा मानते हैं। नई दिल्ली का झंडेवालान मंदिर मां आदिशक्ति को समर्पित प्रमुख शक्ति पीठों में गिना जाता है। राजधानी के मध्य स्थित यह मंदिर पूरे वर्ष श्रद्धालुओं से गुलजार रहता है, जबकि नवरात्रि के दौरान यहां लाखों भक्त दर्शन के लिए पहुंचते हैं। यहां आने वाले लोगों का विश्वास है कि मां दुर्गा की कृपा से जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और भय, चिंता तथा मानसिक अस्थिरता दूर होती है। कई श्रद्धालु बुरी नजर और नकारात्मक प्रभावों से रक्षा की कामना भी यहां करते हैं। मंदिर परिसर में होने वाली भव्य आरती, भजन और आध्यात्मिक वातावरण श्रद्धालुओं को गहरा मानसिक संतोष प्रदान करता है।

उत्तराखंड के नैनीताल जिले में स्थित कैंची धाम पिछले कुछ वर्षों में विश्वभर के श्रद्धालुओं के बीच आध्यात्मिक शांति के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध हुआ है। नीम करौली बाबा के इस आश्रम में देश-विदेश से लोग ध्यान, आत्मचिंतन और मानसिक शांति की तलाश में पहुंचते हैं। यहां का वातावरण सादगी, सेवा और मौन साधना का संदेश देता है। अनेक श्रद्धालु बताते हैं कि यहां कुछ समय बिताने से उन्हें जीवन के तनाव से राहत और भीतर नई सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव होता है। यही कारण है कि कई अंतरराष्ट्रीय हस्तियां भी समय-समय पर यहां दर्शन के लिए आती रही हैं।

इन सातों मंदिरों की विशेषता केवल उनकी धार्मिक महत्ता नहीं है, बल्कि वे लोगों के मन में आशा और विश्वास जगाने का कार्य भी करते हैं। जब कोई व्यक्ति बीमारी, मानसिक तनाव, पारिवारिक संकट या जीवन की कठिन परिस्थितियों से गुजरता है, तब उसे केवल दवाओं की नहीं, बल्कि भावनात्मक सहारे की भी आवश्यकता होती है। आस्था कई लोगों के लिए यही सहारा बनती है। मंदिरों में होने वाली प्रार्थना, भजन, मंत्रोच्चार और सामूहिक श्रद्धा व्यक्ति के भीतर सकारात्मक सोच विकसित करने में सहायक हो सकती है। आधुनिक मनोविज्ञान भी यह स्वीकार करता है कि आशावादी दृष्टिकोण और मानसिक संतुलन जीवन की चुनौतियों का सामना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारतीय संस्कृति ने सदैव विज्ञान और अध्यात्म के बीच संतुलन का मार्ग अपनाया है। आयुर्वेद, योग, ध्यान और प्रार्थना को जीवनशैली का हिस्सा माना गया, लेकिन साथ ही रोगों के उपचार के लिए उचित चिकित्सा का महत्व भी स्वीकार किया गया।

PRGI NO. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmdabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

‘जय जगन्नाथ’ के जयघोष से भक्ति में डूबा सूरत, आठ भव्य रथयात्राओं में उमड़ा आस्था का सैलाब; इस्कॉन की शोभायात्रा बनी आकर्षण का केंद्र

सूरत। आषाढ़ी बीज के पावन पर्व पर डायमंड सिटी सूरत गुरुवार को पूरी तरह भगवान जगन्नाथ की भक्ति में रंगी नजर आई। शहर की सड़कों पर सुबह से ही ‘जय जगन्नाथ’, ‘हरे कृष्ण’ और ‘हरि बोल’ के गगनभेदी जयघोष गूंजते रहे। श्रद्धालुओं की भारी भीड़, भजन-कीर्तन, पुष्पवर्षा, सुसज्जित रथ और भक्तिमय वातावरण ने पूरे शहर को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। इस अवसर पर शहर के विभिन्न क्षेत्रों से कुल आठ भव्य रथयात्राएं निकाली गईं, जिनमें हजारों श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इनमें जहांगीरपुरा स्थित इस्कॉन मंदिर की रथयात्रा सबसे अधिक आकर्षण का केंद्र रही, जिसे देखने और भगवान जगन्नाथ के दर्शन करने के लिए शहरभर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे।

इस वर्ष इस्कॉन मंदिर की रथयात्रा ने अपनी अनूठी शुरुआत के कारण विशेष चर्चा बटोरी। पारंपरिक परंपरा में आधुनिकता का स्पर्श जोड़ते हुए भगवान जगन्नाथ, बलभद्र (बलराम) और देवी सुभद्रा की दिव्य प्रतिमाओं को सबसे पहले सफेद रंग की मर्सिडीज कार में विराजमान कर सूरत रेलवे स्टेशन क्षेत्र तक लाया गया। इसके बाद वैदिक मंत्रोच्चार, शंखध्वनि और हरिनाम संकीर्तन के बीच भगवान को भव्य पारंपरिक रथ पर विराजित किया गया और नगर भ्रमण के लिए रथयात्रा का शुभारंभ हुआ। श्रद्धालुओं ने इसे आधुनिकता और सनातन परंपरा के सुंदर संगम के रूप में देखा।

रथयात्रा के शुभारंभ से पूर्व सूरत रेलवे स्टेशन परिसर में धार्मिक परंपरा के अनुसार ‘छेड़ा पहरा’ की रस्म संपन्न हुई। पूर्व मंत्री पूर्णेश मोदी ने स्वर्ण झाड़ू से मार्ग की प्रतीकात्मक सफाई कर भगवान के स्वागत का संदेश दिया। इस परंपरा का विशेष धार्मिक महत्व माना जाता है, जिसमें यह संदेश दिया जाता है कि भगवान के समक्ष राजा और सामान्य व्यक्ति सभी समान हैं तथा सेवा ही सर्वोच्च धर्म है।

इसके बाद भगवान जगन्नाथ का सुसज्जित रथ हजारों श्रद्धालुओं के साथ रेलवे स्टेशन से रवाना हुआ। रथयात्रा रिंग रोड, कपड़ा बाजार, उधना दरवाजा, मजूरा गेट, अठवा गेट, अडाजन पाटिया, रांदेर रोड सहित शहर के प्रमुख मार्गों से गुजरती हुई अंततः जहांगीरपुरा स्थित इस्कॉन मंदिर पहुंची। पूरे मार्ग में जगह-जगह श्रद्धालुओं, व्यापारिक संगठनों और सामाजिक संस्थाओं ने स्वागत द्वार बनाए थे। भगवान के रथ पर पुष्पवर्षा की गई, आरती उतारी गई और प्रसाद का वितरण किया गया। अनेक स्थानों पर भजन मंडलियों ने संकीर्तन प्रस्तुत किया, जिससे पूरा वातावरण भक्तिमय बना रहा। भगवान जगन्नाथ के रथ की रस्सी खींचने को सनातन परंपरा में अत्यंत पुण्यदायी माना जाता है। इसी मान्यता के चलते हजारों श्रद्धालु रथ खींचने के लिए उत्साहपूर्वक उमड़ पड़े। विशेष रूप से महिलाओं और युवाओं में रथ की रस्सी पकड़ने को लेकर जबरदस्त उत्साह देखने को मिला। कई स्थानों पर श्रद्धालुओं की संख्या अधिक होने से हल्की धक्का-मुक्की की स्थिति भी बनी, लेकिन मौके पर मौजूद पुलिस और स्वयंसेवकों ने तुरंत व्यवस्था संभाल ली और यात्रा को शांतिपूर्वक आगे बढ़ाया।

रथयात्रा के दौरान पूरे मार्ग पर धार्मिक उल्लास चरम पर रहा। भक्तजन भगवान जगन्नाथ के दर्शन के लिए घंटों पहले से सड़कों के किनारे खड़े दिखाई दिए। अनेक श्रद्धालु अपने परिवार सहित यात्रा में शामिल हुए, जबकि बच्चों ने पारंपरिक वेशभूषा धारण कर धार्मिक झांकियों में भाग लिया। जगह-जगह शीतल पेयजल, छाछ, फल और प्रसाद वितरण की व्यवस्था भी की गई, जिससे श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

चूंकि इस बार शहर के अलग-अलग क्षेत्रों से एक साथ आठ रथयात्राएं निकाली गई थीं, इसलिए पुलिस प्रशासन ने व्यापक सुरक्षा व्यवस्था की थी। प्रभारी पुलिस आयुक्त वबांग ज़मीर के नेतृत्व में हजारों पुलिसकर्मी, राज्य रिजर्व पुलिस (एसआरपी), होमगार्ड, ट्रैफिक पुलिस तथा वरिष्ठ अधिकारियों की तैनाती की गई थी। संवेदनशील इलाकों में अतिरिक्त पुलिस बल लगाया गया, जबकि पूरे मार्ग की निगरानी ड्रोन कैमरों, सीसीटीवी कैमरों और आधुनिक कंट्रोल रूम के माध्यम से लगातार की जाती रही। यातायात प्रभावित न हो, इसके लिए पहले से वैकल्पिक मार्ग निर्धारित किए गए थे और नागरिकों को समय रहते ट्रैफिक एडवाइजरी भी जारी की गई थी।

प्रभारी पुलिस आयुक्त वबांग ज़मीर ने रथयात्रा के सफल आयोजन पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि शहर में निकली सभी रथयात्राएं पूरी तरह शांतिपूर्ण, सुरक्षित और सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुईं। उन्होंने कहा कि पुलिस प्रशासन ने कई दिनों पहले से विस्तृत योजना बनाकर सुरक्षा व्यवस्था तैयार की थी, जिसका सकारात्मक परिणाम देखने को मिला। उन्होंने शहरवासियों, धार्मिक संगठनों और स्वयंसेवकों का भी सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

धार्मिक आयोजन के दौरान विभिन्न सामाजिक संगठनों ने भी सेवा कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। कई स्थानों पर चिकित्सा शिविर लगाए गए, जहां श्रद्धालुओं को प्राथमिक उपचार की सुविधा उपलब्ध कराई गई। स्वयंसेवकों ने भीड़ नियंत्रण, जल वितरण और मार्गदर्शन की जिम्मेदारी संभाली, जिससे यात्रा पूरी तरह व्यवस्थित बनी रही।

इस्कॉन मंदिर परिसर में रथयात्रा के समापन पर विशेष महाआरती, हरिनाम संकीर्तन और महाप्रसाद का आयोजन किया गया। हजारों श्रद्धालुओं ने भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा के दर्शन कर परिवार की सुख-समृद्धि, शांति और कल्याण की कामना की। मंदिर परिसर देर शाम तक भक्तों की भीड़ से गुलजार रहा। आषाढ़ी बीज के इस पावन अवसर पर निकली भव्य रथयात्रा ने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि सूरत केवल व्यापार और उद्योग की नगरी ही नहीं, बल्कि धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं को पूरे उत्साह और श्रद्धा के साथ जीवंत रखने वाला शहर भी है। आधुनिकता और परंपरा के अद्भुत संगम, अनुशासित आयोजन, प्रशासन की प्रभावी व्यवस्था और श्रद्धालुओं की अटूट आस्था ने इस वर्ष की भगवान जगन्नाथ रथयात्रा को सूरत के धार्मिक इतिहास के सबसे यादगार आयोजनों में शामिल कर दिया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अहमदाबाद में जगन्नाथ जी की 149वीं रथयात्रा में पहिंद विधि करके रथ को नगरचर्या के लिए प्रस्थान कराया

- गुजरात भगवान जगन्नाथ जी के आशीर्वाद से ‘विकसित भारत’ के संकल्प में सबसे आगे रहेगा : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल
- मुख्यमंत्री ने सोने की झाड़ू से रथ की सफाई-सेवा की परंपरा निभाकर भगवान जगन्नाथ जी का रथ खींचा
- मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कच्छी समाज को नववर्ष की शुभकामनाएं दीं

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुरुवार को आषाढ़ी दूज के पावन अवसर पर अहमदाबाद में भगवान जगन्नाथ जी की 149वीं रथयात्रा को प्रस्थान कराने से पूर्व मंदिर परिसर में भगवान जगन्नाथ जी और उनके रथ की पूजा-अर्चना की।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने लगातार पांचवीं बार भगवान जगन्नाथ जी के रथ की सोने की झाड़ू से सफाई कर पहिंद विधि संपन्न की। इसके बाद मुख्यमंत्री भगवान के मुख्य रथ को नगर यात्रा के लिए मंदिर परिसर से भक्ति-भावपूर्वक बाहर लाने में सहभागी हुए। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी भी इस रस्म में भक्ति-भावपूर्वक सहभागी हुए।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने रथयात्रा के इस पर्व पर सभी नागरिकों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने इसे अपना सौभाग्य माना कि उन्हें आषाढ़ी दूज के पावन अवसर पर भगवान के दर्शन, आरती और रथयात्रा को प्रस्थान कराने का अवसर मिला।

मुख्यमंत्री ने भगवान जगन्नाथ जी की 149वीं रथयात्रा के अवसर पर राज्य के सभी नागरिकों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भगवान जगन्नाथ जी आज भाई बलराम और बहन सुभद्रा जी के साथ नगर यात्रा पर निकले हैं। प्रभु आज स्वयं चलकर श्रमिकों, गरीबों और सभी नागरिकों को आशीर्वाद और दर्शन दे रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने विश्वासपूर्वक कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विकसित भारत का संकल्प लिया है, इस संकल्प को पूरा करने के लिए गुजरात सबसे आगे रहेगा। श्री पटेल ने कहा कि उन्होंने प्रभु के समक्ष यह प्रार्थना की है कि भगवान जगन्नाथ जी राज्य के सभी नागरिकों को निरंतर सुख और समृद्धि प्रदान करें।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि अहमदाबाद की भगवान जगन्नाथ जी की रथयात्रा सांप्रदायिक सद्भाव का प्रतीक बन गई है। उन्होंने इस भव्य रथयात्रा को शांति और सौहार्दपूर्ण माहौल में संपन्न कराने के लिए दिन-रात सेवारत रहने वाले सभी सरकारी विभागों, सेवाभावी संस्थाओं और नागरिकों का आभार व्यक्त किया।

मुख्यमंत्री ने आषाढ़ी दूज के अवसर पर देश-विदेश में बसे कच्छी समाज के सभी लोगों को कच्छी नूतन वर्ष की शुभकामनाएं दीं।

इस अवसर पर भगवान जगन्नाथ मंदिर के महंत श्री दिलीपदास जी महाराज, महापौर श्री हितेशभाई बारोट, स्थानीय विधायक सर्वश्री अमित शाह, अमित ठाकर, दिनेश कुशवाह, कौशिक जैन, हसमुख पटेल, अमूल भट्ट, श्रीमती कंचनबेन रादड़िया, पुलिस महानिदेशक श्री जी.एस. मलिक, मनपा आयुक्त श्री बंछानिधि पाणी, शहर पुलिस आयुक्त श्री अनुपम सिंह गहलोत सहित अन्य महानुभाव एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने जगन्नाथ पुरी की झाँकी कराने वाली अडालज जगन्नाथ मंदिर की पाँचवीं रथयात्रा का शुभारंभ कराया

मुख्यमंत्री ने ‘पहिंद विधि’ तथा आरती कर धन्यता की अनुभूति की

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुरुवार को अडालज स्थित जगन्नाथ मंदिर से जगन्नाथ पुरी की झाँकी कराने वाली भव्य रथयात्रा का शास्त्रोक्त विधि-विधान के साथ स्वर्ण आभा वाली झाड़ू से ‘पहिंद विधि’ करके और भगवान की मंगला आरती करके शुभारंभ कराया।

रथायात्रा के प्रस्थान से पूर्व मंदिर प्रशासन द्वारा मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का पुष्पमाला तथा परंपरागत पगड़ी पहनाकर भावपूर्ण स्वागत किया गया।

भगवान जगन्नाथ, भाई बलभद्र तथा बहन सुभद्राजी के दर्शन करने के लिए सुबह से ही बड़ी संख्या में भक्तजन उमड़ पड़े और समग्र वातावरण ‘जय जगन्नाथ’ के जयघोष से गूंज उठा।

अडालज की इस जगन्नाथ यात्रा का पिछले पाँच वर्षों से श्री जगन्नाथ कल्चरल एकेडेमी एंड रिसर्च सेंटर के उपक्रम से आयोजन किया जाता है। मंदिर परिसर से निकलने वाली यह रथयात्रा शनि मंदिर, उवारसद पुल तथा अडालज सर्किल होकर शाम को निज मंदिर लौटती है।

रथयात्रा प्रस्थान अवसर पर मुख्यमंत्री के साथ गांधीनगर की महापौर श्रीमती मीराबेन पटेल, राज्यसभा के पूर्व सांसद श्री नरहरिभाई अमीन, अनेक आईएएस अधिकारियों, राजनीतिक-सामाजिक अग्रणियों तथा गुजरात में बसे ओडिशावासियों ने उपस्थित रहकर प्रभु के चरणों में श्रद्धापूर्वक शीश झुकाया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से मेमनगर स्थित एसजीवीपी-गुरुकुल की 19वीं रथयात्रा का भव्य प्रस्थान

मुख्यमंत्री ने भगवान जगन्नाथजी की पूजा-अर्चना तथा आरती कर प्राप्त किया आशीर्वाद

गांधीनगर : आषाढ़ी दूज के पवित्र पर्व के उपलक्ष्य में गुरुवार को मेमनगर स्थित एसजीवीपी गुरुकुल में द्वारा आयोजित 19वीं भव्य रथयात्रा का मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से कराया गया।

मुख्यमंत्री ने इस पावन अवसर पर भगवान जगन्नाथजी, भाई बलराम तथा बहन सुभद्राजी के रथों के समक्ष शास्त्रोक्त विधि से पूजन-अर्चन कर महाआरती की। इसके बाद उन्होंने वरिष्ठ संतों तथा महानुभावों की गरिमाममय उपस्थिति में तीनों रथों को प्रस्थान कराया और नगरजनों के लिए सुख, शांति एवं समृद्ध की प्रार्थना की। महापौर श्री हितेशभाई बारोट भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

इस मंगलमय अवसर पर मुख्यमंत्री ने राज्य के नागरिकों को रथयात्रा तथा आषाढ़ी दूज की हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। रथयात्रा प्रस्थान के समय गुरुकुल परिसर में एकत्र हुए हजारों हरिभक्तों एवं श्रद्धालुओं ने ‘जय रणछोड, माखण चोर’ के जयघोष के साथ वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया।

यहाँ उल्लेखनीय है कि परम पूज्य शास्त्रीजी महाराज श्री धर्मजीवनदासजी स्वामी के 125वें जन्म दिवस तथा श्री स्वामीनारायण गुरुकुल-मेमनगर के स्वर्ण जयंती महोत्सव के दिव्य उपक्रम से इस 19वीं रथयात्रा का आयोजन किया गया। यात्रा में जुड़े रथों को विशेष आध्यात्मिक थीम आधारित झाँकियों से सुशोभित किया गया था।

भगवान जगन्नाथजी की यह रथयात्रा मेमनगर तथा उसके आसपास के क्षेत्रों में लगभग 7 किलोमीटर लंबे रूट पर परिभ्रमण कर नगरजनों को दर्शन का लाभ देने के बाद देर शाम गुरुकुल परिसर में सम्पन्न होगी। इस दिव्य रथयात्रा के प्रस्थान महोत्सव में सद्गुरु पुराणी श्री बालकृष्णदासजी स्वामी, शहर अध्यक्ष श्री प्रेरकभाई शाह, मनपा जलापूर्ति समिति के अध्यक्ष श्री धरमशीभाई देसाई, स्थानीय पार्षदगण, पूजनीय संत, अग्रणी, हरिभक्त और विशाल संख्या में नगरजन भक्तिभावपूर्वक सहभागी हुए।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गांधीनगर में ‘कौशल्य विकास भवन’ का शिलान्यास किया

लघु उद्योग भारती तथा उद्योग विकास परिषद की उद्योग एवं राष्ट्र हित में संयुक्त प्रशंसनीय परियोजना

गांधीनगर : नई पीढ़ी के कौशल वर्धन तथा औद्योगिक विकास को अधिक वेग देने के लिए 20 करोड़ रुपए से अधिक की लागत से गांधीनगर में निर्मित होने वाले ‘कौशल्य विकास भवन’ का मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से गुरुवार को आषाढ़ी दूज के पर्व पर शिलान्यास किया गया।

लघु उद्योग भारती-गुजरात तथा उद्योग विकास परिषद के संयुक्त उपक्रम से आयोजित इस समारोह में अखिल भारतीय संयोजक (हिन्दू धर्माचार्य सभा) के परम पूज्य स्वामी परमानंद सरस्वतीजी महाराज ने विशेष रूप से उपस्थित रहकर आशीर्वचन दिए।

नूतन भवन के निर्माण के लिए बड़ी राशि का दान देने वाले दाताओं का मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से सम्मान किया गया।

इस अवसर पर लघु उद्योग भारती-गुजरात तथा उद्योग विकास परिषद के श्री ईश्वरभाई पटेल ने कहा कि आषाढ़ी दूज के पवित्र दिन मुख्यमंत्री के करकमलों से शिलान्यस्त किया गया नूतन कौशल विकास भवन आगामी समय में हमारे देश के युवाओं एवं उद्योगों के लिए प्रगति का एक नया द्वार बनेगा। इस संस्था का मूल मंत्र ‘उद्योग के साथ राष्ट्रहित’ है, जो एक संपूर्ण विचारधारा है। यह भवन हमारे उद्योगों को नई टेक्नोलॉजी तथा कुशलता प्रदान करने में एक पथदर्शक सिद्ध होगा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की उद्योगोन्मुखी नीतियों के परिणामस्वरूप जब हमारा गुजरात देश का ग्रोथ इंजन बना है, तब यह भवन आगामी समय में युवाओं को आधुनिक औद्योगिक आवश्यकताओं के अनुसार तकनीकी प्रशिक्षण देकर रोजगार के नए अवसर के द्वार खोलेगा।

इस कार्यक्रम में गांधीनगर उत्तर की विधायक श्रीमती रीटाबेन पटेल, लघु उद्योग भारती के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री प्रकाशचंद्र गुप्ता, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ-गुजरात प्रांत के प्रांत संघ चालक डॉ. भरतभाई पटेल, प्रांत कार्यवाह श्री शैलेषभाई पटेल, लघु उद्योग भारती संगठन की ओर से पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, गुजरात प्रांत के प्रभारी श्री घनश्याम ओझा, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलदेवभाई प्रजापति, श्री हंसराजभाई गजेरा, जाने-माने उद्योगपति श्री कन्हैयालाल पुष्प जैन, श्री नीलेशभाई गढिया, श्री अरविंदभाई पटेल, श्री ऋतुराजभाई सहित राष्ट्रीय पदाधिकारी और उद्योगपति उपस्थित रहे।

यह भवन उद्योग विकास केन्द्र (सेंटर ऑफ एक्सीलेंस) के रूप में विकसित किया जाएगा।

इस भवन में प्रशिक्षण, परिसंवाद, टेक्निकल, वर्कशॉप, उद्योग मार्गदर्शन, स्किल डेवलपमेंट तथा स्टार्टअप जैसी गतिविधियाँ होंगी। यहाँ नए उद्यमी तैयार होंगे और स्वरोजगार एवं रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे। यह भवन उद्योगकारों, सरकार, विशेषज्ञों तथा शैक्षणिक संस्थानों के बीच संवाद का महत्वपूर्ण केन्द्र बनेगा।

फियो ने भारत- ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) के लागू होने का स्वागत किया; इसे भारतीय निर्यातकों के लिए एक ऐतिहासिक मौका बताया: फियो अध्यक्ष

नई दिल्ली : फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गनाइजेशन्स (फियो) ने भारत- ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते (भारत – ब्रिटेन एफटीए) के लागू होने का गर्मजोशी से स्वागत किया है। इसे एक बड़ा बदलाव लाने वाला मील का पत्थर बताते हुए कहा गया है कि इससे दोनों देशों के बीच व्यापार काफी बढ़ेगा, भारत के निर्यात की प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार होगा और सभी क्षेत्रों के निर्यातकों के लिए नए मौके बनेंगे। इस घटनाक्रम का स्वागत करते हुए फियो के अध्यक्ष श्री एस.सी. रल्हन ने कहा कि भारत-ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते का लागू होना भारत की निर्यात यात्रा में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है। यह भारत के सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक साझेदारों में से एक के साथ हमारी आर्थिक साझेदारी में एक नया अध्याय खोलता है और भारतीय निर्यातकों को ब्रिटेन के बाजार में बेहतर बाजार पहुंच, अधिक निश्चितता और बेहतर प्रतिस्पर्धात्मकता प्रदान करता है। इस समझौते से विशेष रूप से हमारे एमएसएमई , श्रम-प्रधान उद्योगों, किसानों, कारीगरों, शिल्पकारों, महिला उद्यमियों और सेवा क्षेत्र को लाभ होगा, जिससे टिकाऊ निर्यात वृद्धि और रोजगार सृजन के नए रास्ते खुलेंगे।

श्री रल्हन ने कहा कि उम्मीद है कि यह एफटीए टैरिफ बाधाओं को कम करके, बाजार तक पहुंच में सुधार करके, व्यापार प्रक्रियाओं को सरल बनाकर और दोनों देशों के बीच अधिक निवेश और तकनीकी साझेदारी को प्रोत्साहित करके भारत की वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात को काफी बढ़ावा देगा। उन्होंने कहा कि श्रम-प्रधान क्षेत्रों, विशेष रूप से कपड़ा और परिधान, गारमेंट्स, चमड़ा और जूते, कालीन, हस्तशिल्प, रत्न और आभूषण, फर्नीचर, इंजीनियरिंग सामान, खेल का सामान, समुद्री उत्पाद, प्रोसेस्ड फूड, चाय, कॉफी, मसाले, कृषि उत्पाद, फार्मास्यूटिकल्स, रसायन और ऑटो कंपोनेंट्स को इस समझौते से काफी लाभ होगा।

श्री रल्हन ने आगे कहा, “उम्मीद है कि भारत- ब्रिटेन एफटीए भारतीय उत्पादों की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाएगा, क्योंकि इससे निर्यातक बेहतर शर्तों पर ब्रिटेन के बाजार तक पहुंच सकेंगे। यह भारत के श्रम-प्रधान क्षेत्रों की स्थिति को मजबूत करेगा, जिनमें से कई में एमएसएमई का दबदबा है, जिससे रोजगार, ग्रामीण आजीविका और समावेशी आर्थिक विकास को समर्थन मिलेगा।” भारत के कृषि समुदाय के लिए मौकों पर ज़ोर देते हुए, उन्होंने कहा कि इस समझौते से चावल, चाय, कॉफी, मसाले, फल, सब्ज़ियां, प्रोसेस्ड फूड, समुद्री उत्पाद और अन्य वैल्यू-एडेड कृषि उत्पादों के लिए बेहतर निर्यात के मौके बनेंगे। इससे किसानों को ग्लोबल वैल्यू चेन से बेहतर तरीके से जुड़ने और अपनी उपज का बेहतर मूल्य पाने में मदद मिलेगी।

श्री रल्हन ने कहा कि भारत के पारंपरिक सेक्टर—जैसे हैंडलूम, हैंडीक्राफ्ट, कालीन, कारीगरों के उत्पाद और हाथ से बनी चीज़ें—को ब्रिटेन के ग्राहकों के बीच बेहतर मार्केट एक्सेस का फ़ायदा मिलेगा, क्योंकि वे टिकाऊ, नैतिक रूप से बने और प्रीमियम क्वालिटी वाले उत्पादों को ज़्यादा महत्व देते हैं। सर्विस सेक्टर के महत्व पर ज़ोर देते हुए, उन्होंने कहा कि यह समझौता भारत के ग्लोबल स्तर पर प्रतिस्पर्धी सेवा क्षेत्र के लिए भी शानदार मौके खोलता है, जिसमें इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, प्रोफेशनल सर्विस, फाइनेंशियल सर्विस, शिक्षा, हेल्थकेयर, आर्किटेक्चर, इंजीनियरिंग, कंसल्टिंग, क्रिएटिव इंडस्ट्रीज़ और डिजिटल सर्विस शामिल हैं। ज़्यादा मोबिलिटी, बेहतर बिज़नेस सहयोग और मज़बूत कमर्शियल पार्टनरशिप से एक भरोसेमंद ग्लोबल सेवा प्रदाता के तौर पर भारत की स्थिति और मज़बूत होगी।

फियो का मानना है कि यह समझौता स्टार्टअप्स, महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यमों और पहली बार निर्यात करने वालों की ज़्यादा भागीदारी को बढ़ावा देगा, साथ ही ग्लोबल वैल्यू चेन के साथ एकीकरण को मज़बूत करेगा और इनोवेशन-आधारित निर्यात को बढ़ावा देगा। श्री रल्हन ने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि समझौते को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए निर्यातकों के लिए लगातार जागरूकता, क्षमता निर्माण और हैंडहोल्डिंग सपोर्ट की ज़रूरत होगी।

“ फियो भारत सरकार, वाणिज्य विभाग, डीजीएफटी , निर्यात संवर्धन परिषदों, उद्योग संघों और सभी हितधारकों के साथ मिलकर काम करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है, ताकि निर्यातक भारत- ब्रिटेन के मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) के तहत बने मौकों का पूरा फ़ायदा उठा सकें। हम जागरूकता कार्यक्रम, ट्रेनिंग सेशन, खरीदार-विक्रेता बातचीत और मार्केट आउटरीच पहल आयोजित करेंगे ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि निर्यातक—खासकर एमएसएमई —इस ऐतिहासिक समझौते का अधिकतम लाभ उठाने के लिए पूरी तरह तैयार हों।” उन्होंने भरोसा जताया कि भारत- ब्रिटेन एफटीए भारत के एक प्रमुख ग्लोबल व्यापारिक देश बनने और देश के दीर्घकालिक निर्यात विकास लक्ष्यों को हासिल करने के विज़न में महत्वपूर्ण योगदान देगा, और सबसे बढ़कर, 2047 तक ‘विकसित भारत’ के माननीय प्रधानमंत्री के विज़न को साकार करने में मदद करेगा।

भगवान श्री जगन्नाथजी की 149वीं रथयात्रा-अहमदाबाद

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने अहमदाबाद के जगन्नाथ मंदिर में मंगला आरती कर भक्तिभावपूर्वक दर्शन किए

गांधीनगर : केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने गुरुवार को आषाढ़ी दूज के उपलक्ष्य में अहमदाबाद में 149वीं रथयात्रा के पावन अवसर पर अहमदाबाद के सुप्रसिद्ध जगन्नाथजी मंदिर में मंगला आरती में सहभागी होकर भक्तिभावपूर्वक दर्शन किए।

इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी भी सहभागी हुए।

देशभर के लाखों भक्तों में भगवान जगन्नाथ के प्रति दृढ़ आस्था है। प्रतिवर्ष आषाढ़ी दूज के पावन दिवस पर भगवान जगन्नाथजी, बहन सुभद्राजी तथा भाई बलभद्रजी भक्तों को दर्शन देने के लिए स्वयं चलकर नगर यात्रा पर निकलते हैं। ऐसे में रथयात्रा से पहले केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने जगन्नाथ मंदिर में सपरिवार उपस्थित रहकर मंगला आरती तथा पूजा-अर्चना की।

अहमदाबाद शहर ही नहीं, बल्कि समग्र गुजरात के लिए आस्था के प्रतीक समान रथयात्रा के पावन अवसर पर मंदिर के महंत श्री श्रद्धालु भक्तगण बड़ी संख्या में दिलीपदासजी, संत-महंत तथा उपस्थित रहे।

पश्चिम रेलवे - अहमदाबाद मण्डल

पुलों के पुन:निर्माण, LCs के निरसन के संबंध में OHE परिवर्तन एवं ज़ंग लगे हुए केन्टिलिवर के प्रतिस्थापन एवं विभिन्न प्रावधान

निविदा सूचना सं. सिनी.डीईई/टीआरडी/एडीआई/24(2026-27) दिनांक: 15/07/2026

क्रम सं.	निविदा संख्या	कार्य का नाम	अनुमानित लागत	ईएमडी
1	टीआरडी-एडीआई-टी-23-2026-27	अहमदाबाद – विरमगाम, विरमगाम – सामाखियाली और गांधीधाम – न्यु भुज में 17 नंग पुलों के पुन:निर्माण के संबंध में OHE परिवर्तन करने का कार्य।	₹ 38,16,322/-	₹ 76,300/-
2	टीआरडी-एडीआई-टी-24-2026-27	पालनपुर – सामाखियाली अनुभाग में कवर्ड एप्रोचीज सहित RUB का प्रावधान करने द्वारा LC – 50, 54, 58, 59, 60 एवं 80 के निरसन के संबंध में OHE परिवर्तन करने का कार्य।	₹ 69,84,246/-	₹ 1,39,700/-
3	टीआरडी-एडीआई-टी-08R2-2026-27	अहमदाबाद मण्डल :- जंग लगे हुए केन्टिलिवर का प्रतिस्थापन, केन्टिलिवर परिवर्तन, बंदर आरोहण विरोधी उपकरण और पक्षी विरोधी डिस्क का प्रावधान, विशाल PG क्लेंप का प्रावधान तथा पावर सप्लाइ संस्थापन (PSI) में गडे हुए रेल का प्रावधान और बैटरी का प्रतिस्थापन करने का कार्य।	₹ 9,14,85,013/-	₹ 18,29,700/-

सभी निविदाओं के लिए : निविदा जमा करने एवं खुलने की तिथि एवं समय: दिनांक: 12/08/2026 को 15:00 बजे तक उसके बाद नहीं एवं दिनांक: 12/08/2026 को 15:30 बजे निविदा खोली जायेगी । कार्यालय का पता एवं वेबसाईट विवरण: वरिष्ठ मण्डल बिजली इंजीनियर, म.रे.प्र. कार्यालय (प.रे.), चामुंडा ब्रिज के पास, जी.सी.एस. अस्पताल के सामने, नरोडा रोड, अमदुपुरा, अहमदाबाद–382345 । वेबसाईट: www.ireps.gov.in

ADI-106

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly • हमें फॉलो करें: x.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय ने भावनगर मंडल में संरक्षा, यात्री सुविधाओं एवं रेल–पोर्ट समन्वय की व्यापक समीक्षा की

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय ने अपने भावनगर मंडल प्रवास के दौरान 15 जुलाई, 2026 को भावनगर परा–धोला–पीपावाव रेलखंड का विंडो ट्रेलिंग संरक्षा निरीक्षण करने के उपरांत सावरकुंडला एवं धोला जंक्शन का विस्तृत निरीक्षण किया। इस अवसर पर भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा सहित मंडल के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

अपने प्रवास के दौरान महाप्रबंधक ने भावनगर परा स्थित अधिकारी कॉलोनी परिसर में मंडल रेल प्रबंधक एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण के प्रति रेलवे की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय ने भावनगर मंडल के दो दिवसीय प्रवास के दौरान रेल संरक्षा, यात्री सुविधाओं, रेल अवसंरचना, परिचालन दक्षता तथा रेल–पोर्ट समन्वय की व्यापक समीक्षा की। निरीक्षण के दौरान उन्होंने अधिकारियों को संरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए यात्रियों को सुरक्षित, आधुनिक एवं गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ उपलब्ध कराने तथा माल परिवहन सेवाओं को अधिक सक्षम एवं ग्राहक-केंद्रित बनाने के निर्देश दिए।

अपने दौरे के प्रथम दिवस महाप्रबंधक ने भावनगर परा–धोला–पीपावाव रेलखंड का विंडो ट्रेलिंग संरक्षा निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने रेलपथ, पुल-पुलियों, सिग्नल एवं दूरसंचार प्रणाली, परिचालन व्यवस्था, संरक्षा मानकों के अनुपालन तथा रेलवे परिसंपत्तियों के रखरखाव का विस्तृत अवलोकन किया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को संरक्षा के उच्चतम मानकों का पालन सुनिश्चित करते हुए रेल संचालन को और अधिक सुरक्षित, विश्वसनीय एवं दक्ष बनाने के निर्देश दिए।

प्रवास के दौरान महाप्रबंधक ने पीपावाव साइडिंग का भी दौरा किया तथा पोर्ट अधिकारियों के साथ विस्तृत बैठक की।

बैठक में रेलवे एवं पोर्ट के मध्य समन्वय को और अधिक प्रभावी बनाने, उपलब्ध रेल एवं पोर्ट अवसंरचना का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करने तथा माल लदान एवं माल यातायात में वृद्धि की संभावनाओं पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। महाप्रबंधक ने कहा कि रेल–पोर्ट समन्वय को सुदृढ़ कर माल परिवहन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि की जा सकती है, जिससे रेलवे एवं बंदरगाह दोनों की कार्यक्षमता को नई गति मिलेगी।

सावरकुंडला एवं धोला जंक्शन के निरीक्षण के दौरान महाप्रबंधक ने स्टेशन मास्टर कार्यालय, वीआईपी कक्ष, महिला एवं पुरुष प्रतीक्षालय, महिला एवं पुरुष शौचालय, स्टेशन का परिसंचरण क्षेत्र (Circulating Area), कैटरिंग स्टॉल, वाटर हट, प्लेटफॉर्म तथा विभिन्न यात्री सुविधाओं का गहन निरीक्षण किया। उन्होंने उपलब्ध सुविधाओं की गुणवत्ता, स्वच्छता, अनुरक्षण एवं यात्रियों को प्रदान की जा रही सेवाओं की विस्तृत समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

उन्होंने स्टेशन परिसर में स्वच्छता, शुद्ध पेयजल की समुचित उपलब्धता, यात्री सुविधाओं के नियमित अनुरक्षण, दिव्यांगजन-अनुकूल व्यवस्थाओं तथा यात्रियों के लिए सुरक्षित एवं सुगम वातावरण सुनिश्चित करने पर विशेष बल दिया। उन्होंने निर्देश दिए कि स्टेशन पर उपलब्ध सभी सुविधाओं का समय-समय पर निरीक्षण एवं अनुरक्षण किया जाए, ताकि यात्रियों को निरंतर उच्च गुणवत्ता की सेवाएँ उपलब्ध कराई जा सकें।

निरीक्षण के दौरान महाप्रबंधक ने प्लेटफॉर्म, परिसंचरण क्षेत्र एवं स्टेशन परिसर में सुरक्षा, यात्री सुविधा तथा सुव्यवस्थित परिचालन से संबंधित व्यवस्थाओं का भी अवलोकन किया। कैटरिंग स्टॉल एवं वाटर हट का निरीक्षण करते हुए उन्होंने यात्रियों को स्वच्छ, सुरक्षित एवं गुणवत्तापूर्ण खाद्य सामग्री तथा शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के निर्देश दिए।

भावनगर प्रवास के दौरान महाप्रबंधक ने भावनगर की माननीय सांसद एवं भारत सरकार में उपभोक्ता कार्य, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री श्रीमती निमुबेन जयंतिभाई बांभणिया तथा अन्य जनप्रतिनिधियों से शिष्टाचार भेंट भी की। बैठक के दौरान क्षेत्र में संचालित रेलवे विकास परियोजनाओं, यात्री सुविधाओं के विस्तार, रेल अवसंरचना के उन्नयन तथा भविष्य की विकास योजनाओं से संबंधित विभिन्न विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई। जनप्रतिनिधियों द्वारा क्षेत्र की रेल आवश्यकताओं एवं जनहित से जुड़े विभिन्न सुझाव भी प्रस्तुत किए गए।

दौरे के दूसरे दिन, 16 जुलाई, 2026 को महाप्रबंधक ने सिहोर जंक्शन, धंधुका, लोथल भूरखी तथा बोटाद स्टेशनों का विस्तृत निरीक्षण किया। उन्होंने तीनों स्टेशनों पर संरक्षा मानकों, परिचालन व्यवस्थाओं तथा उपलब्ध यात्री सुविधाओं का गहन अवलोकन किया और अधिकारियों को यात्रियों को बेहतर, सुरक्षित एवं सुविधाजनक सेवाएँ उपलब्ध कराने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

धंधुका में महाप्रबंधक ने नव निर्मित ट्रैक्शन सब स्टेशन का उद्घाटन किया, जिससे रेल परिचालन की विद्युत आपूर्ति प्रणाली और अधिक सुदृढ़ एवं विश्वसनीय होगी। इसके पश्चात बोटाद में उन्होंने नव निर्मित रेलवे क्वार्टर का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि कर्मचारियों के लिए बेहतर आवासीय सुविधाएँ उपलब्ध कराना रेलवे की प्राथमिकताओं में शामिल है तथा इससे कर्मचारियों के कार्य वातावरण एवं कार्यक्षमता में सकारात्मक वृद्धि होगी। लोथल भूरखी में महाप्रबंधक ने नेशनल मेरिटाइम हेरिटेज कॉम्प्लेक्स के निर्माण कार्य से संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक की एवं चल रहे कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की।

अपने संबोधन में महाप्रबंधक ने कहा कि नियमित संरक्षा एवं स्टेशन निरीक्षण भारतीय रेल की कार्य संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। ऐसे निरीक्षणों के माध्यम से रेल अवसंरचना, यात्री सुविधाओं एवं परिचालन व्यवस्था का सतत मूल्यांकन सुनिश्चित होता है, जिससे संरक्षा, सेवा गुणवत्ता तथा परिचालन दक्षता में निरंतर सुधार संभव होता है। उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से संरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए यात्रियों को उत्कृष्ट, सुरक्षित एवं विश्वसनीय सेवाएँ प्रदान करने तथा माल परिवहन सेवाओं को अधिक सक्षम एवं ग्राहक-केंद्रित बनाने की दिशा में समर्पित भाव से कार्य करने का आह्वान किया।

पश्चिम रेलवे यात्रियों को सुरक्षित, आधुनिक, स्वच्छ, सुगम एवं विश्वस्तरीय रेल सेवाएँ उपलब्ध कराने के साथ-साथ माल परिवहन सेवाओं को अधिक सक्षम, विश्वसनीय एवं ग्राहक-केंद्रित बनाने के लिए निरंतर प्रतिबद्ध है। महाप्रबंधक का यह दो दिवसीय निरीक्षण दौरा भावनगर मंडल में संरक्षा व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ करने, स्टेशन सुविधाओं के उन्नयन, रेल–पोर्ट समन्वय को नई गति प्रदान करने तथा यात्री एवं माल परिवहन सेवाओं की गुणवत्ता में निरंतर सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध होगा।

पश्चिम रेलवे बांद्रा टर्मिनस और आज़मगढ़ के बीच चलाएगी स्पेशल ट्रेन

पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा उनकी बढ़ती यात्रा मांग को ध्यान में रखते हुए बांद्रा टर्मिनस और आज़मगढ़ के बीच विशेष किराये पर एक स्पेशल ट्रेन चलाई जाएगी।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ट्रेन का विवरण निम्नानुसार है:

ट्रेन संख्या 05184/05183 बांद्रा टर्मिनस – आज़मगढ़ स्पेशल

ट्रेन संख्या 05184 बांद्रा टर्मिनस – आज़मगढ़ स्पेशल प्रत्येक सोमवार को बांद्रा टर्मिनस से 10:45 बजे प्रस्थान करेगी तथा बुधवार को 00:25 बजे आज़मगढ़ पहुँचेगी। यह ट्रेन 20 जुलाई, 2026 से 28 सितम्बर, 2026 तक चलेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 05183 आज़मगढ़ – बांद्रा टर्मिनस स्पेशल प्रत्येक शनिवार को आज़मगढ़ से 22:30 बजे प्रस्थान करेगी तथा सोमवार को 08:10 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुँचेगी। यह ट्रेन 18 जुलाई, 2026 से 26 सितम्बर, 2026 तक चलेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, सूरत, वडोदरा, रतलाम, नागदा, कोटा, बयाना, ईदगाह आगरा, टूण्डला, गोविंदपुरी, सूबेदारगंज, प्रयागराज रामबाग, ज्ञानपुर रोड, बनारस, औंड़िहार, मऊ तथा मुहम्मदाबाद स्टेशनों पर ठहरेगी।

इस ट्रेन में एसी 3-टियर (इकोनॉमी), स्लीपर क्लास तथा द्वितीय श्रेणी के सामान्य कोच होंगे।

ट्रेन संख्या 05184 की बुकिंग 18.07.2026 से सभी पीआरएस काउंटरों तथा आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव एवं संरचना की विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन कर सकते हैं।

पश्चिम रेलवे द्वारा फ्रंट लाइन स्टाफ के लिए 'मनस्विन' पहल की शुरुआत, मुंबई सेंट्रल मंडल द्वारा कर्मचारियों में तनाव प्रबंधन एवं मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए कार्यशाला का आयोजन

पश्चिम रेलवे के मुंबई सेंट्रल मंडल ने प्रोजेक्ट मुंबई के सहयोग से अपने फ्रंट लाइन स्टाफ के लिए निःशुल्क मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता पहल 'मनस्विन' की शुरुआत की है। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, मुंबई सेंट्रल मंडल के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यशाला का उद्देश्य उन कर्मचारियों को तनाव प्रबंधन एवं मानसिक स्वास्थ्य संबंधी सहायता प्रदान करना है, जो उच्च दबाव वाले कार्य वातावरण में कार्य करते हुए मुंबई उपनगरीय रेल नेटवर्क के सुचारु संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

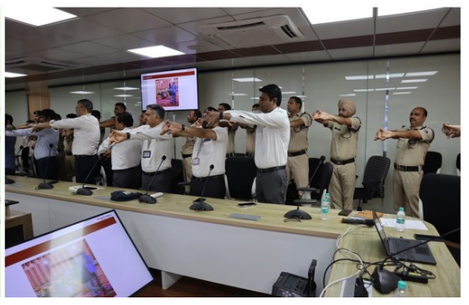

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस पहल का उद्घाटन सत्र मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय स्थित यूसीसी हॉल में अपर

मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन एवं मानव संसाधन) तथा मंडल वाणिज्य प्रबंधक (यात्री विपणन) की उपस्थिति में आयोजित किया गया। इस सत्र में आरपीएफ, वाणिज्य तथा परिचालन विभाग के लगभग 50 कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों को दैनिक तनाव से निपटने के लिए सरल ब्रीदिंग एक्सरसाइज सिखाए गए। साथ ही, उन्हें तनावमुक्त करने तथा उत्साहवर्धन के उद्देश्य से एक एनर्जीक डांस एक्टिविटी का भी आयोजन किया गया। प्रतिभागियों को निःशुल्क मानसिक स्वास्थ्य टूलकिट तथा स्माइली स्ट्रेस बॉल भी प्रदान किए गए।

ये कार्यशालाएँ 29 जुलाई, 2026 तक आयोजित की जाएँगी, ताकि मुंबई सेंट्रल मंडल के अधिक से अधिक फ्रंट लाइन स्टाफ इस पहल का लाभ उठा सकें। तनाव प्रबंधन की सरल तकनीकों एवं रोचक विश्राम गतिविधियों के माध्यम से 'मनस्विन' पहल का उद्देश्य मुंबई मंडल के फ्रंट लाइन स्टाफ के भावनात्मक एवं मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाना है।

सांसद श्री हरिभाई पटेल ने डीआरएम वेद प्रकाश के साथ की बैठक, रेलवे फाटकों, अंडरब्रिज, ओवरब्रिज, नई ट्रेन सेवाओं एवं यात्री सुविधाओं सहित जनहित के 20 से अधिक मुद्दों पर हुई विस्तृत चर्चा

माननीय सांसद, महेसाणा श्री हरिभाई पटेल ने मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, अहमदाबाद में मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक की। लगभग डेढ़ घंटे तक चली इस बैठक में सांसद श्री पटेल ने अपने संसदीय क्षेत्र से जुड़े रेलवे के विभिन्न जनहित के मुद्दों पर विस्तार से चर्चा करते हुए रेलवे प्रशासन के समक्ष महत्वपूर्ण प्रस्ताव एवं मांगें रखीं।

बैठक के दौरान समपार फाटकों पर रोड अंडरब्रिज (RUB), फुट ओवरब्रिज (FOB) एवं अन्य वैकल्पिक मार्गों के निर्माण, बंद ग्रामीण संपर्क मार्गों को पुनः चालू करने, किसानों की खेतों तक सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित करने, रेलवे स्टेशनों पर यात्री सुविधाओं के विस्तार, सुरक्षा संबंधी कार्यों तथा नई ट्रेन सेवाओं एवं ट्रेनों के ठहराव जैसी कई जनहित की मांगों पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया।

बैठक में सांसद श्री हरिभाई पटेल द्वारा उठाए गए प्रमुख मुद्दे निम्नानुसार रहे—

▶▶ मोटी दाऊ (अहमदाबाद–पालनपुर रेल लाइन): पुराने समपार फाटक के स्थान पर किसानों एवं ग्रामीणों की सुविधा हेतु रोड अंडरब्रिज (RUB) के निर्माण की मांग, समपार फाटक संख्या 209 के निकट बंद किए गए पुराने मार्ग को पुनः चालू रखने की मांग एवं समपार फाटक संख्या 209 पर रोड अंडरब्रिज बनाकर किसानों की आवाजाही सुगम बनाने का अनुरोध।

▶▶ बालवा गांव (विजापुर–गांधीनगर नई रेल लाइन): पूर्व में बंद किए गए अंडरब्रिज संख्या 25 का पुनर्निर्माण/पुनर्स्थापन कर किसानों की खेतों तक पहुंच सुनिश्चित करने की मांग।

▶▶ माणेकपुर–आदरज मोटी (विजापुर बड़ी लाइन): समपार फाटक संख्या 27–28 के मध्य लगभग 10 मीटर मार्ग खुला रखने की मांग, जिससे किसानों एवं ग्रामीणों का आवागमन बाधित न हो।

▶▶ कैयल–सेढ़ावी (अहमदाबाद–मेहसाणा रेल लाइन): समपार फाटक संख्या 216 पर रोड अंडरब्रिज निर्माण की मांग।

▶▶ ऊंझा (अहमदाबाद–पालनपुर रेल लाइन डीएफसीसी कॉरिडोर): अंडरब्रिज संख्या 198 के दोनों ओर लगाए गए हाई-गेज रिटेनिंग एंगल्स के कारण दृश्यता बाधित होने की समस्या का समाधान कर सुरक्षा में सुधार करने की मांग एवं बस स्टैंड एवं शहर के पूर्व एवं पश्चिम भाग को जोड़ने हेतु रेलवे लाइन पर नया फुट ओवरब्रिज (FOB) बनाने का प्रस्ताव।

▶▶ आंबलियासन स्टेशन (अहमदाबाद–मेहसाणा रेल लाइन): समपार फाटक संख्या 213 पर रोड अंडरब्रिज निर्माण का प्रस्ताव।

▶▶ पिलुदरा (मेहसाणा–तारंगा रेलखंड): किसानों की सुविधा के लिए रेलवे लाइन के समानांतर लगभग 500 मीटर सड़क निर्माण की मांग।

▶▶ कैयल गांव–डांगरवा–आंबलियासन: रेलवे परियोजना के कारण बंद हुए खेत मार्ग को पुनः बहाल करने तथा स्थायी वैकल्पिक मार्ग उपलब्ध कराने का अनुरोध।

▶▶ वडनगर रेलवे स्टेशन: समपार फाटक संख्या 36 का चौड़ीकरण एवं दोनों ओर पर्याप्त सड़क चौड़ाई उपलब्ध कराने की मांग।

▶▶ भांडु (अहमदाबाद–पालनपुर रेल लाइन): अंडरब्रिज संख्या 946 (कटीपा–जेतलवासना मार्ग) के दोनों ओर बंद किए गए संपर्क मार्ग को पुनः खोलने एवं किसानों के लिए सड़क उपलब्ध कराने की मांग।

▶▶ कांसा गांव (विसनगर–मेहसाणा रेल लाइन): समपार फाटक संख्या 15 के निकट सेफ्टी वॉल में आवश्यक मार्ग निकास उपलब्ध कराने की मांग।

▶▶ संसारी–नोरता (मेहसाणा–पाटन रेल लाइन): समपार फाटक संख्या 30C/E2 पर रोड अंडरब्रिज निर्माण का प्रस्ताव।

▶▶ तंबोडियापरा (खेरालु) मेहसाणा–तारंगा हिल रेलखंड: गांव के निकट समपार फाटक अथवा रोड अंडरब्रिज उपलब्ध कराने की मांग।

इसके अतिरिक्त सांसद श्री पटेल ने रेलवे परियोजनाओं के कारण बंद हुए ग्रामीण संपर्क मार्गों के स्थायी समाधान, किसानों के खेतों तक सुरक्षित एवं निर्बाध पहुंच सुनिश्चित करने, विभिन्न स्टेशनों पर यात्री सुविधाओं का विस्तार, नई ट्रेन सेवाएं प्रारंभ करने तथा महत्वपूर्ण ट्रेनों के अतिरिक्त ठहराव प्रदान करने संबंधी मांगों को भी प्रमुखता से रखा।

बैठक के दौरान मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश ने सांसद द्वारा उठाए गए सभी मुद्दों को गंभीरता से सुना तथा संबंधित विभागों द्वारा प्रत्येक विषय का तकनीकी परीक्षण एवं व्यवहार्यता के आधार पर आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि रेलवे यात्रियों की सुविधा, सुरक्षा तथा क्षेत्र के समग्र विकास से जुड़े कार्यों को प्राथमिकता के साथ आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती सुजाता पांडे ने मंडलीय रेलवे चिकित्सालय, भावनगर में नवनिर्मित चिकित्सक ड्यूटी कक्ष एवं कैजुअल्टी वार्ड का किया उद्घाटन

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती सुजाता पांडे ने अपने भावनगर मंडल प्रवास के दौरान 16 जुलाई, 2026 को मंडलीय रेलवे चिकित्सालय, भावनगर (DRH/BVP) का दौरा किया। इस अवसर पर पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन, भावनगर मंडल की अध्यक्षा श्रीमती शालिनी वर्मा सहित मंडल के वरिष्ठ अधिकारियों एवं चिकित्सकों ने उनका पुष्पगुच्छ भेंट कर आत्मीय स्वागत एवं अभिनंदन किया।

अपने दौरे के दौरान श्रीमती सुजाता पांडे ने मंडलीय रेलवे चिकित्सालय में नवनिर्मित चिकित्सक ड्यूटी कक्ष (Doctor Duty Room) एवं कैजुअल्टी वार्ड का विधिवत उद्घाटन किया। उद्घाटन के पश्चात उन्होंने नवीन सुविधाओं का अवलोकन करते हुए कहा कि आधुनिक एवं सुव्यवस्थित चिकित्सा अवसंरचना मरीजों को गुणवत्तापूर्ण, सुरक्षित एवं त्वरित स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा रेलवे चिकित्सालयों को समयानुकूल सुविधाओं से सुसज्जित करना अत्यंत आवश्यक है।

इस अवसर पर उन्होंने चिकित्सालय के विभिन्न वार्डों, ओपीडी, डायग्नोस्टिक सेवाओं तथा अन्य चिकित्सा सुविधाओं का विस्तृत निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने अस्पताल की स्वच्छता, सुव्यवस्थित कार्यप्रणाली, उपलब्ध चिकित्सा सुविधाओं तथा चिकित्सकों एवं कर्मचारियों द्वारा मरीजों के प्रति प्रदर्शित सेवा भावना की सराहना की।

उन्होंने अस्पताल प्रशासन को मरीजों को सर्वोत्तम स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया।

दौरे के दौरान श्रीमती सुजाता पांडे ने चिकित्सालय में भर्ती मरीजों से व्यक्तिगत रूप से भेंट कर उनका कुशलक्षेम जाना तथा उन्हें फल वितरित कर शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की शुभकामनाएं दीं। मरीजों एवं उनके परिजनों ने इस आत्मीय पहल की सराहना करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की।

इसके पश्चात चिकित्सालय के कॉन्फ्रेंस हॉल में चिकित्सकों के साथ एक समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में अस्पताल में उपलब्ध चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार, मरीजों को और अधिक गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध उपचार उपलब्ध कराने, रोगी सुविधाओं में निरंतर सुधार, आधुनिक चिकित्सा उपकरणों के प्रभावी उपयोग तथा चिकित्सालय के समग्र विकास से संबंधित विभिन्न विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई। श्रीमती सुजाता पांडे ने चिकित्सकों के सुझावों को गंभीरता से सुना तथा भविष्य में आवश्यक सहयोग एवं सुविधाओं के विस्तार का आश्वासन दिया।

अपने संबोधन में उन्होंने मंडलीय रेलवे चिकित्सालय, भावनगर के चिकित्सकों, नर्सिंग स्टाफ एवं समस्त कर्मचारियों द्वारा रोगियों की सेवा में प्रदर्शित समर्पण, अनुशासन एवं उत्कृष्ट कार्य संस्कृति की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि रेलवे चिकित्सालय न केवल रेलवे कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान कर रहे हैं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं, सेवा भावना एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का भी उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

सम्पूर्ण कार्यक्रम गरिमामय, प्रेरणादायी एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की पदाधिकारीगण, मंडल के वरिष्ठ अधिकारी, चिकित्सक, नर्सिंग स्टाफ तथा अस्पताल के कर्मचारी उपस्थित रहे।

सीआरएस ने कटोसण रोड–रणुज ब्रॉड गेज रेलखंड पर यात्री रेल सेवाओं को दी मंजूरी, 63 किमी लंबे ब्रॉड गेज रेलखंड पर जल्द शुरू होंगी यात्री सेवाएं

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में रेलवे संरक्षा आयुक्त (सीआरएस) वेस्टर्न सर्कल, श्री ई. श्रीनिवास ने कटोसण रोड–रणुज ब्रॉड गेज रेलखंड पर यात्री रेल सेवाओं के संचालन को संरक्षा स्वीकृति प्रदान कर दी है।

यह नव परिवर्तित ब्रॉड गेज रेलखंड कटोसण रोड–रणुज गेज परिवर्तन परियोजना (मीटर गेज से ब्रॉड गेज) का हिस्सा है, इस परियोजना की लंबाई लगभग 63 किमी है। इस परियोजना के पूर्ण होने से क्षेत्र के लोगों को सुरक्षित, तेज एवं आधुनिक रेल संपर्क उपलब्ध होगा।

इस अवसर पर अहमदाबाद मंडल के मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) श्री वेद प्रकाश ने कहा कि कटोसण रोड–रणुज ब्रॉड गेज रेलखंड को रेलवे संरक्षा आयुक्त से यात्री सेवाओं के संचालन की स्वीकृति मिलना अहमदाबाद मंडल के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि यह परियोजना क्षेत्र के लाखों यात्रियों, विशेष रूप से बेचराजी, संखलपुर तथा आसपास के क्षेत्रों के लोगों के लिए सुरक्षित, तेज़ और सुविधाजनक रेल यात्रा का नया अध्याय प्रारंभ करेगी। पश्चिम रेलवे सुरक्षित, विश्वसनीय और आधुनिक रेल सेवाएँ उपलब्ध कराने के लिए निरंतर प्रतिबद्ध है। उन्होंने इस परियोजना से जुड़े सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं निर्माण एजेंसियों के सामूहिक प्रयासों की सराहना करते हुए विश्वास व्यक्त किया कि इस रेलखंड पर नियमित यात्री सेवाएं शीघ्र प्रारंभ होने से क्षेत्र की कनेक्टिविटी, पर्यटन, व्यापार तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था को नई गति मिलेगी।

रेलवे संरक्षा आयुक्त द्वारा इस रेलखंड का 9, 10 एवं 11 जुलाई, 2026 को इस सेक्शन का विस्तृत संरक्षा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान WAP-7 विद्युत रेल इंजन के साथ गति परीक्षण भी किया गया, जिसमें ट्रेन ने सफलतापूर्वक 120 किलोमीटर प्रति घंटा की अधिकतम गति प्राप्त की।

निरीक्षण के दौरान रेलवे प्रशासन द्वारा प्रस्तुत सभी संरक्षा प्रमाणपत्रों, तकनीकी दस्तावेजों तथा आवश्यक अभिलेखों का परीक्षण किया गया। सभी निर्धारित मानकों एवं वैधानिक आवश्यकताओं के अनुरूप पाए जाने के बाद रेलवे संरक्षा आयुक्त ने इस रेलखंड पर सार्वजनिक यात्री सेवाओं के संचालन की अनुमति प्रदान की। यह स्वीकृति रेलवे अधिनियम, 1989 के प्रावधानों के अनुरूप सभी आवश्यक संरक्षा औपचारिकताओं के संतोषजनक रूप से पूर्ण होने के बाद प्रदान की गई है।

स्वीकृति के अनुसार मुख्य रेललाइन पर ट्रेनों की अधिकतम सेक्शनल स्पीड 90 किलोमीटर प्रति घंटा निर्धारित की गई है। समपार फाटक संख्या 99A पर अस्थायी रूप से 60 किलोमीटर प्रति घंटा तथा लूप लाइनों पर 15 किलोमीटर प्रति घंटा की गति सीमा लागू रहेगी।

रेलवे संरक्षा आयुक्त द्वारा यह स्वीकृति विभिन्न तकनीकी एवं परिचालन संबंधी शर्तों के अधीन प्रदान की गई है। इनमें नागरिक अभियांत्रिकी, सिग्नल एवं दूरसंचार, विद्युत तथा यात्री सुविधाओं से संबंधित निर्धारित कार्यों को समयबद्ध रूप से पूरा करना, पर्याप्त अनुरक्षण स्टाफ की उपलब्धता सुनिश्चित करना तथा सभी निर्धारित संरक्षा उपायों का पूर्ण अनुपालन करना शामिल है।

इसके अतिरिक्त रेलवे संरक्षा आयुक्त ने यह भी अनुमति प्रदान की है कि भविष्य में निर्धारित सभी शर्तों के सफल अनुपालन, ट्रैक के संतोषजनक प्रदर्शन तथा प्रधान मुख्य इंजीनियर द्वारा आवश्यक प्रमाणन के उपरांत इस रेलखंड की सेक्शनल गति को बढ़ाकर 110 किलोमीटर प्रति घंटा तक किया जा सकेगा।

कटोसण रोड–रणुज ब्रॉड गेज रेलखंड का परिचालन पश्चिम रेलवे की आधारभूत संरचना के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस रेलखंड पर यात्री सेवाएं प्रारंभ होने से उत्तर गुजरात क्षेत्र की रेल संपर्क व्यवस्था और अधिक मजबूत होगी, यात्रियों को बेहतर, सुरक्षित एवं तेज़ रेल सेवाएं उपलब्ध होंगी तथा क्षेत्र के सामाजिक, औद्योगिक, पर्यटन एवं आर्थिक विकास को नई गति मिलेगी।

पश्चिम रेलवे के वाटर पोलो खिलाड़ियों का 79वीं सीनियर, नेशनल एक्वाटिक चैंपियनशिप 2026 में शानदार प्रदर्शन

चेन्नई में आयोजित 79वीं सीनियर नेशनल एक्वाटिक चैंपियनशिप 2026 में भारतीय रेल की वाटर पोलो टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक अपने नाम किया। पूरे टूर्नामेंट के दौरान टीम ने उत्कृष्ट कौशल, बेहतरीन तालमेल और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया। इस उल्लेखनीय उपलब्धि से भारतीय रेल को राष्ट्रीय स्तर पर गौरव प्राप्त हुआ, जिसमें पश्चिम रेलवे के छह खिलाड़ियों ने खिताब जीतने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, भारतीय रेल की स्वर्ण पदक विजेता वाटर पोलो टीम में पश्चिम रेलवे के जिन छह खिलाड़ियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया, उनमें अश्विनीकुमार कुंदे, सारंग वैद्य, श्रेयस वैद्य, भूषण पाटिल, मंदार भोईर तथा आदित्य थेटे शामिल हैं। इन खिलाड़ियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन और अमूल्य योगदान ने इस प्रतिष्ठित नेशनल चैंपियनशिप में भारतीय रेल की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस उपलब्धि को और भी गौरवान्वित करते हुए पश्चिम रेलवे के खिलाड़ी श्री सारंग वैद्य को पूरे टूर्नामेंट में उनके उत्कृष्ट एवं लगातार शानदार प्रदर्शन के लिए वाटर पोलो प्रतियोगिता का

'सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी' घोषित किया गया। यह प्रतिष्ठित व्यक्तिगत सम्मान खेल के प्रति उनके समर्पण, कौशल एवं उत्कृष्टता का प्रमाण है। पश्चिम रेलवे भारतीय रेल की संपूर्ण वाटर पोलो टीम को इस शानदार उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई देती है। साथ ही, विशेष रूप से पश्चिम रेलवे के उन छह खिलाड़ियों को भी बधाई देती है जिन्होंने अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से संगठन का गौरव बढ़ाया है। पश्चिम रेलवे इन सभी खिलाड़ियों को भविष्य की राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भी निरंतर सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करती है।